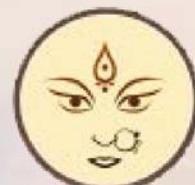




पावन पथ वाराणसी



श्री ब्रह्म प्रधान विनायक यात्रा



श्री द्वादश ज्योतिलिंग यात्रा



काशी में चार धाम यात्रा



श्री काशी विष्णु यात्रा



श्री द्वादश आदित्य यात्रा

श्री पुकादश विनायक यात्रा

उत्तर प्रदेश पर्यटन

यू.पी. नहीं देखा, तो इंडिया नहीं देखा.



पावन पथ

मोक्ष का पथ

पावन पथ की अविस्मरणीय यात्रा से खुलेंगे मोक्ष के द्वार “काशी—मोक्ष की नगरी” के मूलस्वरूप को बनाए रखने के लिए श्री काशी विश्वनाथ मंदिर को केंद्र मानकर पावन पथ नामक सर्किट स्थापित किया गया है जिसमें पवित्र नगरी वाराणसी के प्रमुख मंदिर सम्मिलित हैं। इस सर्किट का उद्देश्य इन प्राचीन मंदिरों एवं इनके पौराणिक महत्व पर प्रकाश डालना तथा वाराणसी के वास्तविक रंग एवं समृद्ध भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना है। विभिन्न हिंदू देवी—देवताओं के दर्शन, आशीर्वाद और आध्यात्मिक शांति की तलाश करते दर्शनार्थियों को तीर्थ यात्रा का पुण्यफल प्राप्त कराने के लिए विभिन्न तीर्थयात्राओं को इस सर्किट में समाहित किया गया है।

पावन पथ यात्रा में निम्न 10 यात्राएं सम्मिलित हैं :

- ❖ काशी भैरव यात्रा
- ❖ नौ गौरी यात्रा
- ❖ नौ दुर्गा यात्रा
- ❖ काशी में चार धाम
- ❖ द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा
- ❖ द्वादश आदित्य यात्रा
- ❖ काशी में विष्णु यात्रा
- ❖ अष्ट विनायक यात्रा
- ❖ अष्ट प्रधान विनायक यात्रा
- ❖ एकादश विनायक यात्रा

1. काशी भैरव यात्रा

काशी भैरव यात्रा पवन पथ यात्रा का एक महत्वपूर्ण भाग है जिसमें काशी में स्थित भैरव अर्थात् काल भैरव, बटुक भैरव समेत अष्ट भैरव यात्रा सम्मिलित है। इस पूर्ण यात्रा के माध्यम से भगवान भैरव का आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है।

1.1. श्री काल भैरव मंदिर

काल भैरव भगवान शिव का रौद्र रूप हैं जो भारतीय उपमहाद्वीप में अत्यंत पूज्यनीय हैं। शिव महापुराण के अनुसार भगवान शिव ने काल भैरव को मुक्तपुरी काशी की सर्वदा हेतु आधिपत्य प्रदान किया था। भगवान



श्री काल भैरव

शिव का यह रूप भीषण होने से भैरव तथा काल के इनसे भयभीत होने के कारण काल भैरव के नाम से विख्यात है। भगवान शिव ने काल भैरव का रूप मात्र इसलिए लिया था कि वे ब्रह्मा और विष्णु के श्रेष्ठता के द्वंद में ब्रह्मा जी का मस्तक काट सकें। अतः काल भैरव भगवान शिव का एक अत्यंत रौद्र रूप हैं जो कि नकारात्मक ऊर्जा के विनाश व काशी के संरक्षण हेतु सदैव तत्पर हैं। काल भैरव को पाप—भक्षण नाम से भी ख्याति प्राप्त है क्योंकि मान्यता अनुसार यह अपने भक्तों का पाप तत्काल ही नष्ट कर देते हैं। वाराणसी में के-32 / 22, भैरोंनाथ में स्थित काल भैरव मंदिर में श्री काल भैरव विराजमान हैं। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु यह मंदिर

ग्रोश का पथ

प्रातः 5:30 से दोपहर 1:30 तक तथा सायं 4:30 से रात्रि 9:30 तक खुला रहता है।

1.2. श्री बटुक भैरव मंदिर

भगवान भैरव के विभिन्न स्वरूपों में से एक श्री बटुक भैरव, श्री काल भैरव के बाल स्वरूप हैं जिनकी आराधना भगवान शिव की आराधना से पहले होती है। 'बटुक' का संबंध 'ब्राह्मण के पुत्र' से है। शिव महापुराण में



श्री बटुक भैरव

वर्णित कथा के अनुसार बटुक भैरव, भगवान शिव के महान उपासक एक ब्राह्मण के पुत्र थे। ब्राह्मण ने अपनी निष्ठा एवं दृढ़ संकल्प से भगवान शिव की नित्य पूजा की जिससे प्रसन्न होकर भगवान शिव ने ब्राह्मण को वरदान दिया कि जो भी उपासक उनकी सच्चे मन से पूजा करना चाहता है उसे भगवान शिव की पूजा से पूर्व ब्राह्मण पुत्र अर्थात् बटुक भैरव की पूजा करनी होगी। भगवान भैरव का यह स्वरूप सात्त्विक, सुंदर एवं मुदुल माना जाता है। मान्यता अनुसार बटुक भैरव के इस स्वरूप की पूजा करने से उपासकों को सभी प्रकार के सुख एवं रिद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती हैं। प्रभु के इस रूप की यदि भैरव मंत्र के उच्चारण कर पूजा की जाए, तो भैरव तत्काल प्रसन्न होते हैं तथा अपने भक्तों की आशीर्वाद स्वरूप सभी इच्छाएं पूर्ण कर देते हैं। वाराणसी में बटुक भैरव मंदिर कमच्छ देवी मन्दिर के समीप स्थित है। उपासक अपनी इच्छानुसार श्री बटुक भैरव की आराधना किसी भी समय कर सकते हैं।

1.3. अष्ट भैरव यात्रा

काशी में स्थित भगवान भैरव के आठ स्वरूप अष्ट भैरव यात्रा में समिलित हैं जिनके दर्शन मात्र से श्रद्धालुओं की विपत्तियाँ दूर होती हैं तथा उन्हें भगवान भैरव का आशीर्वाद प्राप्त होता है। अष्ट भैरव यात्रा में समिलित मंदिर निम्न प्रकार हैं

1.3.1. श्री रुरु भैरव मंदिर

श्री रुरु भैरव भगवान भैरव के त्रिनेत्रि, कृपालु, शांत एवं युवा स्वरूप हैं। श्री रुरु भैरव, गुरु भैरव अथवा आनंद भैरव नाम से विख्यात



श्री रुरु भैरव

भगवान भैरव के यह स्वरूप अपने श्रद्धालुओं को ज्ञानवृद्धि से समृद्ध करते हैं ताकि वे एक सफल जीवन व्यतीत कर सकें। इनका शुद्ध धवल रूप जो आभूषणों व माणिकों से सुसज्जित है, उनके अलौकिक ज्ञान आभा को प्रदर्शित करता है। मान्यता अनुसार श्री रुरु भैरव दक्षिण उत्तर दिशा के संरक्षक हैं। वाराणसी में श्री रुरु भैरव मंदिर बी 4 / 16, हनुमान घाट पर स्थित है। प्रतिदिन यह मंदिर दर्शन-पूजन हेतु प्रातः 5:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा सायं काल में 5:00 बजे से 9:30 तक खुलता है। प्रतिदिन प्रातः एवं सायं काल में मंदिर में आरती का आयोजन होता है।

1.3.2. श्री चण्ड भैरव मंदिर

श्री चण्ड भैरव भगवान भैरव के त्रिनेत्रि, कृपालु एवं युवा स्वरूप



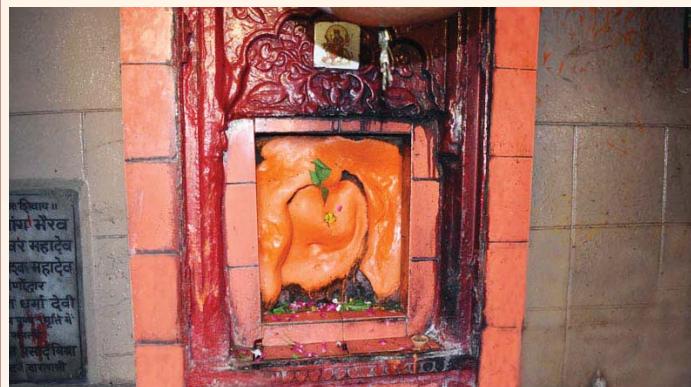
श्री चण्ड भैरव

ग्रोश का पथ

हैं। भगवान भैरव के इस स्वरूप का रंग नीला है तथा यह सर्व शक्ति युक्त माने जाते हैं। मान्यता अनुसार श्री चण्ड भैरव अपने श्रद्धालुओं को अतुल्य ऊर्जा प्रदान करते हैं ताकि वे अपने प्रतिद्वंद्वियों पर विजय प्राप्त कर सकें। यह दक्षिण दिशा के संरक्षक माने जाते हैं। वाराणसी में श्री चण्ड भैरव मंदिर दुर्गा देवी मन्दिर के परिसर, बी 27 / 2, दुर्गा कुंड में स्थित है। यह मंदिर दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

1.3.3. श्री असितांग भैरव मंदिर

श्री असितांग भैरव भगवान भैरव के त्रिनेत्रि, कृपालु एवं शांत स्वरूप हैं जो सभी श्रापों का नाश करने वाले माने जाते हैं। यह स्वर्णिम रंग रूप, सुगठित शरीर, त्रिशूल, उमरु व खड़ग लिए श्रद्धालुओं को रचनात्मक योग्यता प्रदान करते हैं। मान्यता अनुसार श्री असितांग भैरव के आशीर्वाद



श्री असितांग भैरव

से श्रद्धालुओं को रचनात्मक क्षमताओं की प्राप्ति होती है। यह पूर्व दिशा के संरक्षक माने जाते हैं। वाराणसी में श्री असितांग भैरव मंदिर के 0 52 / 39, वृद्ध कालेश्वर के पास महा मृत्युंजय मंदिर में मैदागिन क्षेत्र में स्थित है। यह मंदिर दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

1.3.4. श्री क्रोधन भैरव मंदिर

श्री क्रोधन भैरव भगवान भैरव के त्रिनेत्रि, शांत, युवा स्वरूप हैं जो नीले हैं तथा जटायुक्त हैं। आदि भैरव के नाम से विख्यात श्री क्रोधन भैरव अपने श्रद्धालुओं को बल व साहस प्रदान करते हैं ताकि वे अत्यंत सफलताएं अर्जित कर सकें। वे अपनी प्रतिमा में धुएँ के रंग में प्रदर्शित किए जाते हैं तथा खड़ग व ढाल धारण किए रहते हैं। मान्यता अनुसार श्री क्रोधन भैरव अपने श्रद्धालुओं की सभी बाधाओं को दूर करते हैं। यह दक्षिणी—पश्चिम दिशा के संरक्षक माने जाते हैं। वाराणसी में क्रोधन भैरव मंदिर बटुक भैरव मंदिर प्रांगण में बी 0 31 / 126, कमच्छा देवी मंदिर परिसर, कमच्छा में स्थित

है। प्रतिदिन यह मंदिर दर्शन—पूजा हेतु प्रातः 5:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक, व सायं 4:00 बजे से रात्रि 12:00 बजे तक खुला रहता है। मंदिर



श्री क्रोधन भैरव

में प्रातः एवं सायंकाल में आरती होती है।

1.3.5. श्री कपाल भैरव मंदिर

श्री कपाल भैरव भगवान भैरव के त्रिनेत्रि, शांत, युवा स्वरूप हैं जो जटायुक्त हैं। इनकी प्रतिमा में इन्हें पीली त्वचा में प्रदर्शित किया जाता है। श्री कपाल भैरव भगवान भैरव के वज्रयुद्ध धारी रूप हैं जिनके हाथों में खड़ग व जल कमंडल है, जो इंद्राणी शक्ति के स्वामी हैं तथा जो गज पर



श्री कपाल भैरव

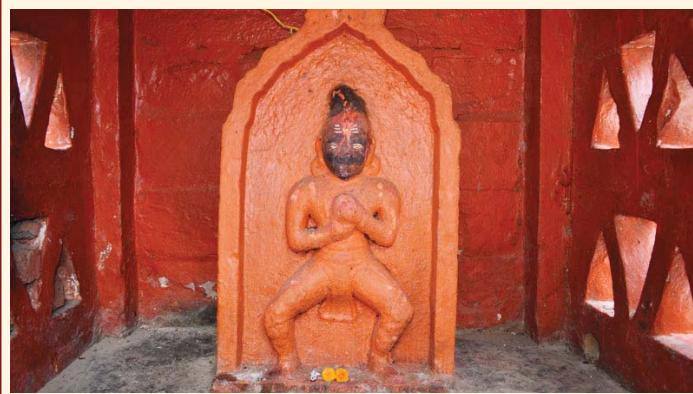
सवार हैं। मान्यता अनुसार श्री कपाल भैरव अपने श्रद्धालुओं को पूर्ण रूप से फलदायी कार्यों के विषय में ही ध्यान व पूर्ण करने में सहायता करते हैं। यह उत्तरीदृपश्चिमी दिशा के संरक्षक माने जाते हैं। वाराणसी में कपाल भैरव मंदिर ए 01 / 123, अलईपुरा में स्थित है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन हेतु

ग्रोश का पथ

मंदिर प्रातः 6:00 बजे से 11:00 बजे तक व सायं 6:00 बजे से रात्रि 9रु00 बजे तक खुला रहता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार परिवर्तित की जा सकती है।

1.3.6. श्री संहार भैरव मंदिर

श्री संहार भैरव भगवान भैरव के त्रिनेत्रि, युवा, दशभुजा, सर्प मालाधारी, रौद्र स्वरूप हैं जो आठ प्रकार की संपदा प्रदान करते हैं। इनकी प्रतिमा में इन्हें विद्युत चमक सी त्वचा से प्रदर्शित किया जाता है, जिनके हाथों में कुंड उनका शस्त्र है, लौह गदाधारी, खटक, परीघा लौह गदा व भिन्डीपला अंकुश है। मान्यता अनुसार श्री संहार भैरव श्रद्धालुओं के पापों का संहार करते हैं तथा सभी नकारात्मक शक्तियों पर विजय प्राप्त करने में



श्री उन्मत्त भैरव



श्री संहार भैरव

सहायता करते हैं। यह उत्तर पूर्व दिशा के संरक्षक माने जाते हैं। वाराणसी में संहार भैरव मंदिर ६०१ / ८२ पाटन दरवाजा, गाय घाट के समीप स्थित है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 5:00 बजे से 11:00 बजे तक एवं सायं 5रु00 बजे से रात्रि 9:30 बजे तक खुला रहता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार बदली जा सकती है।

1.3.7. श्री उन्मत्त भैरव मंदिर

श्री उन्मत्त भैरव भगवान भैरव के त्रिनेत्रि, शांत, युवा स्वरूप हैं जिनकी आभा स्वर्णिम है। हंस पर सवार भगवान के यह स्वरूप खड़ग धारण करते हैं, मुँडधारी हैं, मूसल व कवच धारी हैं। मान्यता अनुसार श्री उन्मत्त भैरव अपने श्रद्धालुओं को हानिकारक तत्त्वों को नियंत्रित करने में सहायता करते हैं जो उन पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। यह पश्चिम दिशा के संरक्षक माने जाते हैं। उन्मत्त भैरव मंदिर वाराणसी से 10 किमी दूर पंचक्रोशी मार्ग देओरा गाँव में स्थित है। दर्शन—पूजा हेतु यह मंदिर प्रतिदिन पूरे दिन खुला रहता है।



श्री भीषण भैरव

2.0. नौ गौरी यात्रा

भगवान शिव की नगरी के नाम से विख्यात काशी मान्यता अनुसार भगवान शिव के त्रिशूल पर स्थित है। जहाँ भगवान शिव हों, वहाँ माता गौरी का निवास अवश्यंभावी है। अतः माता गौरी अपने भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करने के लिए वाराणसी में नौ गौरी के रूप में वास करती हैं। वासंतिक नवरात्रि के प्रथम दिवस की प्रतिपदा तिथि को गौरी दर्शन के लिए अंत्यन्त फलदायी माना जाता है। साथ ही ऐसा माना जाता है कि शारदीय नवरात्रि में गौरी दर्शन से प्रसन्नता, सम्पदा, शांति तथा पापों से मुक्ति प्राप्त होती है।

नौ गौरी के रूप

वासंतिक नवरात्रि के दौरान नौ गौरी पूजन का अत्यधिक महत्व माना जाता है। इस समय नवरात्रि के प्रतिपदा पर मुखनिर्मालिका गौरी, द्वितीया पर ज्येष्ठा गौरी, तृतीया पर सौभाग्य गौरी, चतुर्थी पर श्रृंगार गौरी, पंचमी पर विशालाक्षी गौरी, षष्ठी पर ललिता गौरी, सप्तमी पर भवानी गौरी, अष्टमी पर मंगला गौरी तथा नवमी पर महालक्ष्मी गौरी का पूजन होता है। माता गौरी के नौ रूपों के मंदिर काशी के विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं। नौ गौरी यात्रा का वर्णन काशी खंड के अध्याय 100 में किया गया है। यह यात्रा अमावस्या के बाद की तृतीया को करना श्रेयस्कर है।

2.1. माता मुखनिर्मालिका गौरी मंदिर

वासंतिक नवरात्रि में माता गौरी के नौ रूपों की उपासना का अत्यधिक महत्व माना गया है। इस अवधि में नवरात्रि के प्रतिपदा पर श्रद्धालु माता मुखनिर्मालिका गौरी का दर्शन—पूजन करने भारी संख्या में काशी आते हैं। मान्यता अनुसार जब महादेव निवास के लिए काशी में उपस्थित हुए तब उनके साथ देवी गौरी ने भी अपने भक्तों को सौभाग्य एवं समृद्धि का वरदान देने के लिए काशी में आगमन किया। तबसे माता मुखनिर्मालिका गौरी यहीं काशी में स्थित अपने भक्तों का कल्याण करती है।



माता मुखनिर्मालिका मंदिर

वाराणसी में मुखनिर्मालिका गौरी मंदिर के 3/42, गाय घाट हनुमान मंदिर में स्थित है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन के लिए मंदिर प्रातः 6:00 बजे से 10:00 बजे तक एवं सायं 6:00 बजे से 8:00 बजे तक खुला रहता है। मंदिर में प्रातः व सायं काल को आयोजन होता है।

2.2. माता ज्येष्ठा गौरी मंदिर

वासंतिक नवरात्रि में नौ गौरी के स्वरूपों में से द्वितीय माता ज्येष्ठा गौरी को समर्पित है। इस दिन भारी संख्या में श्रद्धालु माता ज्येष्ठा



माता ज्येष्ठा गौरी मंदिर

गौरी के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर में आते हैं। वाराणसी में ज्येष्ठा गौरी

मंदिर सप्त सागर क्षेत्र में के—63/24 में स्थित है। मंदिर की यात्रा हेतु स्थानीय वाहन उपलब्ध है। प्रतिदिन मंदिर पूजा हेतु प्रातः 6:00 से 10:00 बजे तक व सायं 6 बजे से 8 बजे तक खुला रहता है। मंदिर में प्रातः व सायं काल को आयोजन होता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार बदली जा सकती है।

2.3. माता सौभाग्य गौरी मंदिर

वासंतिक नवरात्रि के तृतीया पर नौ गौरी के तृतीय रूप माता सौभाग्य गौरी के पूजन का अत्यधिक महत्व है। धर्मग्रंथों में देवी गौरी के इस रूप की उपासना करने का विशेष उल्लेख मिलता है। मान्यता अनुसार देवी सौभाग्य गौरी के दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को अपने जीवन में सभी प्रकार की प्रसन्नताएँ व समृद्धियों की प्राप्ति होती है। सौभाग्य गौरी सीके 0 38/8, आदि विश्वनाथ मंदिर में स्थित है। प्रतिदिन मंदिर पूजा हेतु प्रातः 6:00 बजे से 11:00 बजे तक व सायं 6:00 बजे से 10:00 बजे तक खुला रहता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार बदली जा सकती है।

मोक्ष का पथ



माता सौभाग्य गौरी मंदिर

2.4. माता श्रृंगार गौरी मंदिर

वासंतिक नवरात्रि की चतुर्थी नौ गौरी के श्रृंगार गौरी रूप को समर्पित है। भक्तों के दर्शन—पूजन हेतु प्रशासन द्वारा वर्ष में एक बार वासंतिक नवरात्रि की चतुर्थी को माता श्रृंगार गौरी मंदिर खोला जाता है। वाराणसी में माता श्रृंगार गौरी मंदिर ज्ञानवापी मस्जिद के पीछे स्थित है।



माता श्रृंगार गौरी मंदिर

2.5. माता विशालाक्षी गौरी मंदिर

वासंतिक नवरात्रि की पंचमी पर नौ गौरी के माता विशालाक्षी गौरी स्वरूप के दर्शन—पूजन का अत्यधिक महत्व है। वाराणसी में डी० 3 / 85 मीर घाट पर स्थित माता विशालाक्षी गौरी मंदिर एक "शक्ति पीठ" के रूप में प्रसिद्ध है। मान्यता अनुसार मंदिर में पूजन, दान व मंत्रोच्चार अत्यंत फलदायी है। माता विशालाक्षी गौरी मंदिर कजली तीज पर्व के लिए विख्यात है। यह पर्व हिंदू मास भाद्रपद (अगस्त) के दूसरे सप्ताह के तीसरे दिन मनाया जाता है। दक्षिण भारतीय श्रद्धालुओं के मध्य इस मंदिर की

विशेष महत्ता है। वे इस मंदिर को तीन मुख्य देवियों के मंदिरों के रूप में पूजते हैं यथा कांची कामाक्षी, मदुरई मीनाक्षी तथा काशी विशालाक्षी। प्रतिदिन माता विशालाक्षी गौरी मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु प्रातः 04:30 बजे से 11:00 बजे तक तथा सायं में 5:00 बजे से 10:00 बजे तक खुला रहता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार बदली जा सकती है। मंदिर में प्रातः व सायं काल को आरती का आयोजन होता है।



माता विशालाक्षी गौरी मंदिर

2.6. माता ललिता गौरी मंदिर

वासंतिक नवरात्रि की षष्ठी नौ गौरी के माता ललिता गौरी स्वरूप को समर्पित है। वाराणसी में सीको ० 1.67, ललिता घाट पर स्थित ललिता गौरी मंदिर पवित्र नगरी वाराणसी के ऐतिहासिक मंदिरों में से एक माना जाता है। हिन्दू मान्यता अनुसार माता ललिता गौरी उन दस देवियों में से एक हैं जिन्हें सामूहिक रूप से महाविद्या या दश—महाविद्या कहा जाता है। देवी ललिता इन दश—महाविद्या समूह में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं एवं उन्हे



माता ललिता गौरी मंदिर

ग्रोश का पथ

देवी आदिशक्ति का उच्चतम रूप माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि ललिता गौरी की आराधना करने से मनुष्यों के समस्त कष्ट समाप्त हो जाते हैं। इस मंदिर में माता ललिता गौरी की प्रतिमा के साथ काशी देवी व भागीरथी देवी की प्रतिमा भी स्थापित है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 5:00 बजे से 9:00 बजे तक व सायं 5:00 बजे से 9:30 तक खुलता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार बदली जा सकती है।

2.7. माता भवानी गौरी मंदिर

वासंतिक नवरात्रि की सप्तमी माता भवानी गौरी के दर्शन—पूजन हेतु समर्पित है। ऐसी मान्यता है कि माँ अपने श्रद्धालुओं के जीवन से सभी



माता मंगला गौरी मन्दिर



माता भवानी गौरी मंदिर

बाधाएँ व आपदाएँ दूर कर देती हैं। माता भवानी गौरी की आराधना से मनुष्य के भीतर से भय समाप्त हो जाता है तथा उनके जीवन में प्रसन्नता व समृद्धि की प्राप्ति होती है।

वाराणसी में माता भवानी गौरी मंदिर डी० 8 / 38 में अन्नपूर्णा देवी मंदिर से लगे राम मंदिर में स्थित है। मंदिर में माता भवानी गौरी की प्रतिमा अधिष्ठात्री काली देवी एवं जगन्नाथ भगवान की प्रतिमाओं के मध्य में विराजमान है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन के लिए मंदिर प्रातः 5:30 बजे से 11:30 तक व सायं 5:00 बजे से 9:30 तक खुला रहता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार बदली जा सकती है।

2.8. माता मंगला गौरी मंदिर

वासंतिक नवरात्रि की अष्टमी पर माता नौ गौरी के आठवें स्वरूप माता मंगला गौरी के दर्शन—पूजा का अत्यधिक महत्व है। काशी खण्ड के अनुसार सूर्य देव ने पंचनंदा तीर्थ (पंचगंगा घाट) पर एक शिवलिंग तथा देवी गौरी की प्रतिमा स्थापित कर कठोर तपस्या की थी जिससे प्रसन्न होकर वरदान स्वरूप स्वयं भगवान शिव एवं माता गौरी यहाँ स्थित हुए।



माता महालक्ष्मी गौरी मन्दिर

का निवास है। काशी के सभी शक्तिपीठों में महालक्ष्मी शक्तिपीठ सर्वाधिक शक्तिशाली मानी जाती हैं। ऐसा माना जाता है कि श्रद्धालु द्वारा महालक्ष्मी की आराधना करने से सभी प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति होती है।

साथ ही धन—सम्पदा आदि प्राप्त होती है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 6:00 बजे से 1:00 बजे तक तथा सायं 5:00 बजे से रात्रि 10:00 बजे तक खुलता है। मंदिर में प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल में आरती होती है।

3.0 नौ दुर्गा यात्रा

हिन्दू मान्यताओं के अनुसार, देवी दुर्गा के नौ स्वरूप हैं। नवरात्रि में इन स्वरूपों के दर्शन—पूजन का विशेष महत्व होता। देवी दुर्गा का प्रत्येक स्वरूप अलग नाम, अलग शास्त्रीय पहचान, अलग ग्रहीय महत्ता, मंत्र व अलग मंगलाचरण लिए हैं। दुर्गा देवी यात्रा नवरात्रि में की जाती हैं जिसमें श्रद्धालु सभी नौ दिनों में उनके नौ स्वरूपों की आराधना करते हैं। माँ दुर्गा के नौ नाम इस प्रकार हैं—

- माँ शैलपुत्री
- माँ ब्रह्मचारिणी
- माँ चंद्रघंटा
- माँ कूष्माण्डा
- माँ स्कंदमाता
- माँ कात्यायनी
- माँ कालरात्रि
- माँ महागौरी
- माँ सिद्धिदात्री

देवी का नाम “दुर्गा” कैसे पड़ा

काशी खंड में वर्णित कथा के अनुसार एकदा एक दुर्गासुर नामक राक्षस ने वर्षों की तपस्या द्वारा शक्तियाँ प्राप्त कर अहंकार के कारण समस्त धार्मिक जनों पर अत्याचार प्रारंभ कर दिया। उसका प्रकोप स्वर्ग लोक व भूलोक में फैल गया था। इस समस्या के समाधान की उपेक्षा में समस्त देव एवं मनुष्य भगवान शिव की शरण में गए। दुर्गासुर की शक्तियों का ज्ञात होने के कारण भगवान शिव ने देवी पार्वती को समाधान के लिए कहा। अतः देवी ने अपनी प्रतिनिधि के तौर पर, कालरात्रि को कुछ अन्य महिलाओं के साथ दुर्गासुर को चेतावनी देने के लिये भेजा कि दुर्गासुर निर्दोष धार्मिक लोगों को कष्ट देना बंद करे तथा उन्हे उनकी भूमि लौटा कर यहाँ से कहीं और चला जाए अन्यथा देवी पार्वती निश्चित ही उसका सँहार करेंगी। अहंकारवश दुर्गासुर ने अपने योद्धाओं को देवी कालरात्रि को बंधी बनाने का आदेश दिया। परिणामवश माँ कालरात्रि ने एक भीषण हुंकार के साथ अपने मुख से कई अग्नि के गोले निकाले और दुर्गासुर के हजारों योद्धाओं को जलाकर भस्म कर दिया। तदपश्चात माँ कालरात्रि आकाश मार्ग से देवी के निवास विद्याचल पर्वत पहुँची और उन्हें घटना से अवगत कराया। शीघ्र ही दुर्गासुर उस स्थान पर आ पहुँचा जहा माँ आदिशक्ति विराजमान थीं और एक घमसान युद्ध आरंभ हुआ जिसमें अदिशक्ति ने अपनी विभिन्न शक्तियों

को विभाजित करके कई दिव्य शक्तियों से निर्मित स्वरूप लिए। देवी ने अपनी सर्वोच्च शक्तियों के प्रयोग से दुर्गासुर व उसके सभी सेनापतियों का सँहार किया। दुर्गासुर का सँहार करने के उपलक्ष्य में देवी दुर्गा के नाम से जानी गयीं।

3.1. माँ शैलपुत्री मंदिर

शारदीय नवरात्रि की प्रतिपदा नौ दुर्गा के प्रथम स्वरूप माँ शैलपुत्री के दर्शन—पूजन के लिए समर्पित है। मान्यता अनुसार माँ दुर्गा के प्रथम रूप माँ शैलपुत्री का विवाह भगवान शिव से हुआ था। पर्वतराज



माँ शैलपुत्री मंदिर

हिमालय की पुत्री होने के कारण यह देवी शैलपुत्री के नाम से विख्यात है।

वाराणसी में माँ शैलपुत्री मंदिर ऐ 40 / 11, मरिहा घाट पर स्थित है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन हेतु यह मंदिर प्रातः 5:00 बजे से 12:00 बजे तक व दोपहर 3 बजे से रात्रि 10 बजे तक खुला रहता है। मंदिर में प्रातः व सायंकाल में आरती होती है।

3.2. माँ ब्रह्मचारिणी मंदिर

शारदीय नवरात्रि की द्वितीया को नौ दुर्गा के माँ ब्रह्मचारिणी स्वरूप के दर्शन—पूजन का अत्यधिक महत्व है। ब्रह्मचारिणी से तात्पर्य है तप का आचरण करने वाली। मान्यता अनुसार भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए देवी ने अनेक वर्षों तक कठिन तप किया था। ऐसी मान्यता है कि माँ ब्रह्मचारिणी श्रद्धालुओं को असीमित आशीष प्रदान करती हैं। इनकी आराधना से श्रद्धालु में तपस्या, बलिदान, सांसारिक इच्छाओं से मुक्ति, अनुशासन तथा स्व—नियंत्रण जैसी योग्यताएँ उत्पन्न होती हैं। साथ ही ब्रह्मचारिणी देवी की प्रतिदिन उपासना करने से मनुष्यों को ब्रह्म विद्या में विशेषज्ञता प्राप्त होती है। वाराणसी में माँ ब्रह्मचारिणी मंदिर के 22 / 72, दुर्गा घाट पर स्थित है। प्रतिदिन मंदिर दर्शन—पूजन हेतु प्रातः 6:00 बजे से 1:30 बजे तक व सायं 4:00 बजे से रात्रि 11:00 बजे तक खुला रहता है।

ग्रोश का पथ

मंदिर में प्रातः 6:00 बजे (मंगल आरती), सायं 4:00 बजे (संध्या आरती) व रात्रि के 11:00 बजे (शयन आरती) हैं।



माँ ब्रह्माचारिणी मंदिर

3.3. माँ चंद्रघंटा मंदिर

शारदीय नवरात्रि की तृतीया नौ दुर्गा के माँ चंद्रघंटा स्वरूप के दर्शन—पूजन हेतु समर्पित है। उनके ललाट पर घंटे के आकार का अर्धचंद्र सुशोभित है, जिसके कारण वे चंद्रघंटा के नाम से विख्यात हैं। अपने योद्धा स्वरूप के बावजूद, वे अपने श्रद्धालुओं के सम्मुख सौम्य, समृद्ध व शांत रूप



माँ चंद्रघंटा मंदिर

में प्रकट होती हैं। वाराणसी में माँ चंद्रघंटा मंदिर सीको 23:34, चंद्रघंटा गली में स्थित है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 6:00 बजे से 10:00 बजे तक, व सायं 6:00 बजे से 8:00 बजे तक खुला रहता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार बदली जा सकती है।

3.4. माँ कूष्माण्डा मंदिर

शारदीय नवरात्रि की चतुर्थी को नौ दुर्गा के माँ कूष्माण्डा स्वरूप के दर्शन—पूजन का अत्यधिक महत्व है। मान्यता अनुसार माँ कूष्माण्डा



माँ कूष्माण्डा मंदिर

अपने श्रद्धालुओं को स्वारथ्य, धन व सम्पद का आशीष देती हैं। वे सूर्य को निर्देशित करने वाली मानी जाती हैं। वाराणसी में माँ कूष्माण्डा मंदिर दुर्गा कुण्ड क्षेत्र में स्थित है। प्रतिदिन मंदिर दर्शन—पूजन हेतु प्रातः 4:00 बजे से 1:00 बजे तक व सायं 3:00 बजे से रात्रि 11:00 बजे तक खुला रहता है।

3.5. स्कन्द माता मंदिर

शारदीय नवरात्रि की पंचमी नौ दुर्गा के स्कन्द माता स्वरूप के दर्शन—पूजन हेतु समर्पित है। माँ दुर्गा का यह स्वरूप उनकी गोद में उनके



स्कन्द माता मंदिर

पुत्र स्कन्द अर्थात् कार्तिकेय के विराजमान होने के कारण स्कन्द माता नाम से विख्यात है। मान्यता अनुसार स्कन्द माता के दर्शन—पूजन से

मोक्ष का पथ

श्रद्धालूओं की सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं, वे शांति, प्रसन्नता एवं मोक्ष का मार्ग सरलता से प्राप्त करते हैं। वाराणसी में स्कन्द माता मंदिर जो 0 6 / 33 जैतपुरा क्षेत्र में स्थित है। श्रद्धालूओं को वर्ष भर में स्कन्द माता के दर्शन—पूजन हेतु केवल दो ही दिन अर्थात् वासंतिक नवरात्रि एवं शारदीय नवरात्रि की पंचमी पर आज्ञा दी जाती है।

3.6. माँ कात्यायनी मंदिर

शारदीय नवरात्रि की षष्ठी को नौ दुर्गा के माँ कात्यायनी स्वरूप के दर्शन—पूजन का विशेष महत्व है। ऐसी मान्यता है कि देवी का दर्शन श्रद्धालूओं को दुखरू व भय से मुक्ति प्रदान करता है। वे एक अलौकिक



माँ कात्यायनी मंदिर

ऊर्जा प्रवाहित करती हैं। माँ कात्यायनी विकटा देवी के नाम से भी विख्यात हैं जो कि एक प्रसिद्ध शक्ति पीठ है। वाराणसी में कात्यायनी देवी मंदिर वीरेश्वर मंदिर में सीको 71 / 158 में सिंधिया घाट पर स्थित है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 5:00 बजे से 11:30 तक, दोपहर 12:30 से रात्रि 9:30 बजे तक खुला रहता है। मंदिर में विशेष आरती 7:00 बजे से लेकर 8:30 तक होती है।

3.7. माँ कालरात्रि मंदिर

शारदीय नवरात्रि की सप्तमी को नौ दुर्गा के माँ कालरात्रि स्वरूप के दर्शन—पूजन का विशेष महत्व है। मान्यता अनुसार माँ कालरात्रि का शरीर पूर्णतः अंधकार जैसा काला है, उनके केश बिखरे हुए हैं, उनके गले में मुँड माला विद्युत समान प्रकाशित होता है, उनके तीन नेत्र हैं जो ब्रह्मांड की भाँति गोल हैं तथा उनसे अनवरत प्रकाश निकलती रहती है। वे अपनी नासिका द्वारा लगातार अग्नि की फुँकार करती रहती हैं। यद्यपि उनका स्वरूप भयावह है, तब भी वह अपने श्रद्धालूओं को सदैव शुभ वरदान देती हैं इसीलिए उनको शुभंकरी भी माना जाता है। उनकी कृपा से श्रद्धालु को भय नहीं होता। वाराणसी में माँ कालरात्रि मंदिर डी 0 8 / 17, अन्नपूर्णा—

विश्वनाथ गली के समानांतर कालिका गली में स्थित है। प्रतिदिन मंदिर दर्शन—पूजन हेतु प्रातः 6:00 बजे से दोपहर 12:30 तक तथा सायं 4:00 बजे से रात्रि 10:00 बजे तक खुला रहता है। प्रतिदिन मंदिर में प्रातः व सायंकाल में आरती का आयोजन होता है।



माँ कालरात्रि मंदिर

3.8. माँ महागौरी मंदिर

पुराणों के अनुसार, माँ

अन्नपूर्णा प्राचीन विश्वनाथ मंदिर में महागौरी के नाम से जानी जाती हैं। वे माँ दुर्गा का आठवां स्वरूप हैं। माँ महागौरी के दर्शन की महिमा का वर्णन करते हुए, ये कहा जाता है कि उनकी आराधना से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं तथा श्रद्धालूओं को दैविक उपलब्धियाँ मिलती हैं। ऐसी मान्यता है कि महागौरी देवी की आराधना करने से संसार की सभी देवियों की उपासना से मिलने वाले पुण्य की प्राप्ति होती है। प्रत्येक वर्ष धनतेरस से अर्थात् त्रयोदशी दीपावली अमावस्या पूर्व से अमावस्या के एक दिन बाद तक (कुल चार दिन), दक्षिण भारतीय श्रद्धालु स्वर्णिम अन्नपूर्णा के दर्शन को दीपावली



माँ महागौरी मंदिर

मोक्ष का पथ

दर्शन, गंगा स्नान एवं विश्वनाथ दर्शन के साथ करते हैं। वाराणसी में माँ महागौरी मंदिर डी-9/1, अन्नपूर्णा मंदिर में स्थित है। यह मंदिर प्रातः 5:00 बजे से रात्रि 10:00 बजे तक खुलता है। आरती प्रातः एवं सायं काल होती है। इस मंदिर के प्रांगण में प्रतिदिन दोपहर के बाद आनंदनम भी होता है जिसमें श्रद्धालुओं को निःशुल्क भोजन दिया जाता है।

3.9. माँ सिद्धिदात्री मंदिर

शारदीय नवरात्रि की नवमी को नौ दुर्गा के माँ सिद्धिदात्री स्वरूप के दर्शन—पूजन का विशेष महत्व है। मान्यता अनुसार माँ सिद्धिदात्री अपने



माँ सिद्धिदात्री मंदिर

श्रद्धालुओं को हर प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान करती हैं। उनके श्रद्धालु दुखरूप से मुक्त रहते हैं और वे सांसारिक सुखों के उपभोग के बाद मोक्ष की प्राप्ति करते हैं। वाराणसी में माँ सिद्धिदात्री मंदिर सीके 0 7/124, सिद्धेश्वरी मोहल्ला में स्थित है। प्रतिदिन दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 5:00 बजे से 10:00 बजे तक एवं सायं 4:00 बजे से रात के 10:00 बजे तक खुलता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार बदली जा सकती है।

4.0. काशी में चार धाम

आदि शंकराचार्य द्वारा भारत के चारों दिशाओं में चार धामों की स्थापनी की गयी है। चार धाम भारत में चार तीर्थों के नाम हैं अर्थात् बद्रीनाथ, द्वारका, जगन्नाथ पुरी व रामेश्वरम। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार यह चार धाम मोक्ष प्राप्ति में सहायक हैं। ये हिंदुओं में विशेष सम्मानजनक स्थान हैं और हर व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार चार धाम की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

4.1. बद्रीनारायण मंदिर

वाराणसी में बद्री नारायण घाट पर स्थित बद्रीनारायण मंदिर उत्तराखण्ड के नर—नारायण पर्वत शृंखला के मध्य स्थित बद्रीनारायण धाम की प्रतिकृति है। बद्री नारायण घाट के सामने गंगा में नर—नारायण तीर्थ

की स्थिति मानी जाती है। ऐसी मान्यता है कि नर—नारायण तीर्थ में स्नान उपरांत बद्री नारायण के दर्शन—पूजन से उत्तराखण्ड स्थित बद्री नारायण के समान फल की प्राप्ति होती है।

4.2. द्वारिकाधीश मंदिर

वाराणसी में संकुल धारा पोखरा पर स्थित द्वारिकाधीश मंदिर गुजरात के द्वारिका में समुद्र तट पर स्थित द्वारिकाधीश धाम का प्रतीक स्वरूप है। मान्यता अनुसार काशी में स्थित इस मंदिर में दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को द्वारिका स्थित द्वारिकाधीश धाम के समान फल की प्राप्ति होती है।

4.3. रामेश्वरम मंदिर

वाराणसी में हनुमान घाट पर स्थित रामेश्वरम मंदिर तमिलनाडू के रामेश्वरम में समुद्र तट पर स्थित रामेश्वरम धाम का प्रतीक स्वरूप है। मान्यता अनुसार काशी स्थित इस मंदिर में दर्शन—पूजन करने से तमिलनाडू स्थित रामेश्वरम धाम के समान फल प्राप्त होता है।

4.4. जगन्नाथ मंदिर

वाराणसी में असि घाट के समीप स्थित जगन्नाथ मंदिर उड़ीसा के पुरी में स्थित जगन्नाथ धाम का प्रतीक स्वरूप है। मान्यता अनुसार काशी स्थित इस मंदिर में दर्शन—पूजन करने से उड़ीसा स्थित जगन्नाथ धाम के समान फल प्राप्त होता है।

5.0. द्वादश ज्योतिर्लिंग यात्रा

वाराणसी में सर्वव्यापक शंकरजी ज्योतिर्लिंग स्वरूप में बारह स्थानों पर स्थित हैं। शिव महापुराण के अनुसार जो भी मनुष्य द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन एवं स्पर्श करता है वह समस्त पापों से मुक्त होकर सम्पूर्ण सिद्धियों को प्राप्त करता है। शिव महापुराण के अनुसार भगवान शिव की समस्त शिवलिंगों में से प्रधान ज्योतिर्लिंग निम्न हैं :

- i. सोमनाथ ज्योतिर्लिंग
- ii. मलिलकार्जुन ज्योतिर्लिंग
- iii. महाकाल ज्योतिर्लिंग
- iv. ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग
- v. वैद्यनाथेश्वर ज्योतिर्लिंग
- vi. भीमेश्वर ज्योतिर्लिंग
- vii. रामेश्वर ज्योतिर्लिंग
- viii. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग
- ix. विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग

ग्रोश का पथ

- x. त्रयम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग
- xi. केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग
- xii. घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग

इन प्रधान द्वादश ज्योतिर्लिंग के प्रतीक स्वरूप काशी में विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं। मान्यता अनुसार काशी में स्थित इन द्वादश ज्योतिर्लिंग के दर्शन—पूजन से प्रधान द्वादश ज्योतिर्लिंग की आराधना करने के समान पुण्य एवं फल की प्राप्ति होती है।

5.1. सोमेश्वर महादेव मंदिर

काशी में स्थित सोमेश्वर ज्योतिर्लिंग गुजरात में काठियावाड़ के प्रभास क्षेत्र में स्थित सोमनाथ ज्योतिर्लिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। शिव महापुराण में ऐसा वर्णित है कि सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन—पूजन से उपासकों को क्षय तथा कोढ़ आदि रोगों से



सोमेश्वर महादेव मंदिर

मुक्ति मिल जाती है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन—पूजन से गुजरात स्थित सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के पूजन के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। वाराणसी में सोमेश्वर महादेव मंदिर डी-16/34, मानमंदिर घाट पर स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रतिदिन प्रातः 5:00 से 8:00 बजे तथा सायं 6:00 से 8:00 बजे तक खुलता है।

5.2. मल्लिकार्जुन महादेव मंदिर

वाराणसी में स्थित मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग आन्ध्र प्रदेश के कृष्ण नगर जिले में कृष्णा नदी के तट पर श्री शैल पर्वत पर स्थित मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। आन्ध्र प्रदेश में स्थित मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग “दक्षिण के कैलाश” नाम से भी विख्यात है। शिव महापुराण के अनुसार मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के



दर्शन—पूजन से श्रद्धालु समस्त पापों से मुक्त होकर सम्पूर्ण अभीष्ट

मल्लिकार्जुन महादेव मंदिर

को प्राप्त करता है। अतः मान्यता अनुसार मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से ही श्रद्धालु समस्त सुख प्राप्त कर सकते हैं। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन—पूजन से आन्ध्र स्थित मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के पूजन के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। वाराणसी में मल्लिकार्जुन महादेव मंदिर त्रिपुरांतकेश्वर डी- 59/95, सिगरा टीले पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु यह मंदिर प्रातः 6:00 से 11:30 बजे तथा सायं 5:00 से 9:00 बजे तक खुलता है।

5.3. महाकालेश्वर महादेव मंदिर

वाराणसी में स्थित महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश में क्षिप्रा नदी के तट पर उज्जैन नामक नगरी में विराजमान महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। शिव महापुराण के अनुसार महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन से स्वप्न में भी कोई दुखः नहीं होता, जिस कामना से श्रद्धालु महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग का



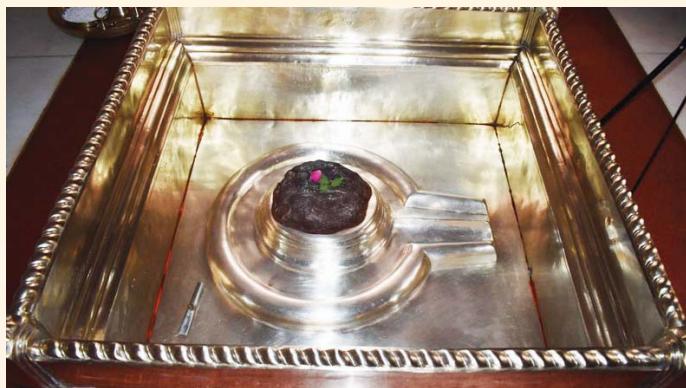
महाकालेश्वर महादेव मंदिर

मोक्ष का पथ

दर्शन करता है उसका मनोरथ पूर्ण हो जाता है तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिलिंग के दर्शन—पूजन से मध्य प्रदेश स्थित महाकालेश्वर ज्योतिलिंग के पूजन के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। वाराणसी में महाकालेश्वर महादेव मंदिर के 0 52 / 39, मृत्युंजय महादेव मंदिर परिसर में मैदागिन क्षेत्र में स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 4:00 से रात्रि 12:00 बजे तक पूजा—अर्चना हेतु खुला रहता है।

5.4. औंकारेश्वर महादेव मंदिर

वाराणसी में स्थित औंकारेश्वर ज्योतिलिंग मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी के तट पर मान्धाता नगरी में विराजमान औंकारेश्वर ज्योतिलिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिलिंगों में से एक है। शिव महापुराण के अनुसार जो भी श्रद्धालु यहाँ आकर भगवान शिव की पूजा—अर्चना करते हैं



यह शिवलिंग सत्युरुषों को भोग व मोक्ष देने वाला माना जाता है।

वैद्यनाथेश्वर महादेव मंदिर

काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिलिंग के दर्शन—पूजन से झारखण्ड स्थित वैद्यनाथ ज्योतिलिंग के पूजन के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। वाराणसी में वैद्यनाथ महादेव मंदिर आदिकेश्वर मंदिर में नक्षत्रेश्वर लिंग, ए—37 / 51, राजघाट किले के पास स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 6:00 से 12:00 बजे तथा सायं 4:00 से 10:00 बजे तक खुलता है।

5.6. भीमेश्वर महादेव मंदिर

वाराणसी में स्थित भीमेश्वर ज्योतिलिंग महाराष्ट्र के पुणे क्षेत्र में सह्य र्घवत पर स्थित भीमाशंकर ज्योतिलिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिलिंगों में से एक है। शिव महापुराण के अनुसार जो भक्त इनका दर्शन एवं पूजन करता है, उसकी सभी आपत्तियों का निवारण हो जाता है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिलिंग के दर्शन—पूजन से महाराष्ट्र स्थित भीमेश्वर ज्योतिलिंग के पूजन के समान

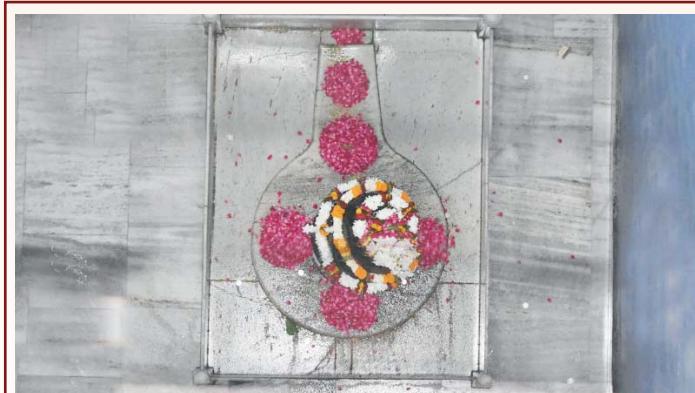


ओंकारेश्वर महादेव मंदिर

वह आवागमन से मुक्त हो जाता है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिलिंग के दर्शन—पूजन से मध्य प्रदेश स्थित औंकारेश्वर ज्योतिलिंग के पूजन के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। वाराणसी में औंकारेश्वर महादेव मंदिर ए 0 33 / 23, पठानी टोला, मच्छोदरी के उत्तर में स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 5:00 से 11:00 बजे तथा सायं 5:00 से 9:00 बजे तक खुलता है।

5.5. वैद्यनाथेश्वर महादेव मंदिर

वाराणसी में स्थित वैद्यनाथ ज्योतिलिंग झारखण्ड में संथाल परगने में ₹० आर० रेलवे जसीडीह स्टेशन के पास स्थित वैद्यनाथ ज्योतिलिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिलिंगों में से एक है। इस ज्योतिलिंग के माहात्म्य के विषय में शिव महापुराण में यह वर्णन है कि शिवलिंग के दर्शन मात्र से श्रद्धालुओं के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं तथा पाप से मुक्ति मिलती है।



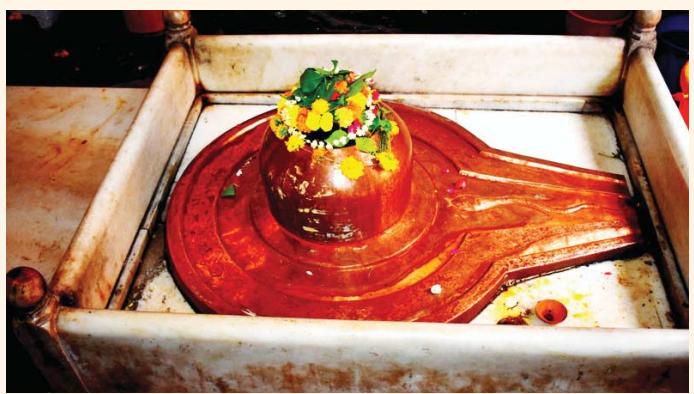
भीमेश्वर महादेव मंदिर

मोक्ष का पथ

पुण्य की प्राप्ति होती है। वाराणसी में भीमाशंकर महादेव मंदिर सी0के0 31 / 12, काशी करवत मंदिर में स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर दिन भर खुला रहता है। यहाँ लिंग भू—तल में स्थापित है अतः लिंग का दर्शन ऊपर से ही किया जा सकता है।

5.7. रामेश्वर महादेव मंदिर

वाराणसी में स्थित रामेश्वर ज्योतिलिंग तमिलनाडु में समुद्र के तट पर स्थित रामेश्वर ज्योतिलिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिलिंगों में से एक है। शिव महापुराण के अनुसार इस ज्योतिलिंग को त्रेता युग में भगवान् राम ने स्थापित किया था। शिव महापुराण के अनुसार जो मनुष्य



रामेश्वर महादेव मंदिर

रामेश्वर शिवलिंग पर दिव्य गंगाजल चढ़ाता है, वह जीवनमुक्त हो जाता है तथा अन्त में मोक्ष की प्राप्ति करता है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिलिंग के दर्शन—पूजन से तमिलनाडु स्थित रामेश्वर ज्योतिलिंग के पूजन के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। वाराणसी में रामेश्वर महादेव मंदिर वाराणसी में बी 4 / 16, हनुमान घाट पर स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 5:00 से 12:00 बजे तथा सायं 6:00 से 9:00 बजे तक खुलता है।

5.8. नागेश्वर महादेव मंदिर

वाराणसी में स्थित नागेश्वर ज्योतिलिंग गुजरात के द्वारका में ईशान कोण से 12–13 मील दूर स्थित नागेश्वर ज्योतिलिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिलिंगों में से एक है। शिव महापुराण के अनुसार यह ज्योतिलिंग त्रैलोक्य की कामना को पूर्ण करने वाला है। अतः इसके दर्शन से मनुष्यों को पापों से मुक्ति मिलती है तथा समस्त मनोरथों की प्राप्ति होती है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिलिंग के दर्शन—पूजन से गुजरात स्थित नागेश्वर ज्योतिलिंग के पूजन के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। वाराणसी में नागेश्वर महादेव मंदिर सी0के0



नागेश्वर महादेव मंदिर

1 / 21, पठानी टोला, भौंसला घाट में स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 7:00 से 09:00 बजे तथा सायं 07:00 से 08:00 बजे तक खुलता है।

5.9. विश्वेश्वर महादेव मंदिर

शिव महापुराण के अनुसार तीनों लोकों के स्वामी तथा ब्रह्मा, विष्णु आदि देवों से सर्वथा ही सेवनीय, मुक्तिदाता एवं सम्पूर्ण जगत के स्वामी भगवान शिव विश्वेश्वर रूप में मोक्ष प्रकाशिका एवं ज्ञान—दात्री नगरी काशी में विराजमान हैं। शिव महापुराण में विश्वेश्वर ज्योतिलिंग का माहात्म्य



विश्वेश्वर महादेव मंदिर

बताते हुए कहा गया है कि विश्वेश्वर ज्योतिलिंग भोग व मोक्ष प्रदान करने वाला है। अन्य मोक्षदायक धार्मों में सारूप्य मुक्ति प्राप्त होती है, केवल काशी में ही सायुज्य नामक सर्वोत्तम मुक्ति सुलभ होती है। काशी विश्वनाथ मंदिर सी0के0 35 / 19, चौक वाराणसी में स्थित है। यह मंदिर 1–2 घंटों के मामूली अंतर के साथ 24 घंटे खुला रहता है।

5.10. त्र्यम्बकेश्वर महादेव मंदिर

वाराणसी में स्थित त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिलिंग महाराष्ट्र के नासिक जिले में ब्रह्मगिरि के पास गोदावरी नदी के तट पर स्थित त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिलिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिलिंगों में से एक है। शिव महापुराण के अनुसार जो भी मनुष्य वहाँ स्नान करता है, वह अपने सब पापों



त्र्यम्बकेश्वर महादेव मंदिर

से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिलिंग के दर्शन—पूजन से महाराष्ट्र स्थित त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिलिंग के पूजन के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। वाराणसी में त्र्यम्बकेश्वर महादेव मंदिर डी-38/21, हौज कटोरा में स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 06:00 से 11:00 बजे तथा सायं 05:00 से 09:00 बजे तक खुलता है। यहाँ प्रातः एवं सायं काल में आरती होती है।

5.11. केदारेश्वर महादेव मंदिर

वाराणसी में स्थित केदारेश्वर ज्योतिलिंग हिमालय के केदारपर्वत



केदारेश्वर महादेव मंदिर

में मन्दाकिनी के पश्चिमी दिशा में स्थित केदारेश्वर ज्योतिलिंग की प्रतिकृति है जो प्रधान द्वादश ज्योतिलिंगों में से एक है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ दर्शन करने से भक्तों को हिमालय के केदारनाथ के दर्शन करने समान पुण्यफल प्राप्त होता है। शिव महापुराण के अनुसार जो व्यक्ति केदारेश्वर महादेव के दर्शन और पूजन करता है, उसके सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। वाराणसी में केदारेश्वर महादेव मंदिर-6/102, केदार घाट के प्रसिद्ध इलाके पर स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 03:00 से 11:00 बजे तक खुला रहता है।

5.12. घुश्मेश्वर महादेव मंदिर

काशी में स्थित घुश्मेश्वर ज्योतिलिंग महाराष्ट्र राज्य के अंतर्गत दौलताबाद स्टेशन से 12 मील दूर बेरुल गांव के समीप स्थित घुश्मेश्वर ज्योतिलिंग की प्रतिकृति है जो द्वादश ज्योतिलिंगों में से एक है। शिव महापुराण के



घुश्मेश्वर महादेव मंदिर

अनुसार घुश्मेश्वर ज्योतिलिंग के दर्शन—पूजन से भक्तों को सुख की प्राप्ति होती है। काशी खण्ड के अनुसार वाराणसी में स्थित इस ज्योतिलिंग के दर्शन—पूजन से महाराष्ट्र स्थित घुश्मेश्वर ज्योतिलिंग के पूजन के समान पुण्य की प्राप्ति होती है। घुश्मेश्वर महादेव मंदिर कमच्छ देवी मंदिर परिसर वाराणसी में बटुक भैरव के पास स्थित है।

6.0. भगवान शिव का काशी से मन्दराचल को गमन तथा काशी में पुनः आगमन की इच्छा

काशी खण्ड में भगवान शिव द्वारा ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर मोक्षनगरी काशी को छोड़ मन्दराचल को प्रस्थान करने का वर्णन एक कथा में किया गया जो इस प्रकार है कि जब पाद्म कल्प के मन्वन्तर में सर्वलोक में बड़ी भारी अनावृष्टि हुई थी तब समस्त प्राणीगण परमपीड़ित हो गये थे। इसकी सूचना से भगवान ब्रह्मा व्याकुल हो गये, तभी उनकी दृष्टि विरुद्धात राजा रिपुञ्ज्य पर पड़ी जो महाक्षेत्र में निश्चलेन्द्रिय होकर तपस्या कर रहा

ग्रोश का पथ

था। ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर राजा का नाम दिवोदास रखा तथा उसे पृथ्यी का शासन संभालने का अनुग्रह किया। उत्तर स्वरूप राजा दिवोदास ने भगवान ब्रह्मा की यह अनुग्रह स्वीकार तो कर ली परंतु ब्रह्मा जी से यह प्रतिज्ञा ली कि उसके राज्य में देवता लोग स्वर्ग में ही रहें तभी उसका राज्य निष्कण्टक रहेगा। राजा दिवोदास की प्रार्थना स्वीकार कर भगवान ब्रह्मा ने समस्त देवताओं को स्वर्ग प्रस्थान करने को कहा। परंतु महादेव से उनकी प्रिय नगरी छोड़ के जाने को कहना इतना सरल न था। अतः जब मन्दराचल के तप से प्रसन्न हो भगवान शिव उसे वर देने चले तथा मन्दराचल ने भगवान शिव से पार्वती व परिवार सहित उसपर वास करने का वर माँगा तब सही क्षण प्राप्त कर भगवान ब्रह्मा ने भगवान शिव को सर्वलोक में फैली अराजकता तथा उसके निवारण हेतु राजा दिवोदास द्वारा पृथ्यी के शासन हेतु की गई प्रतिज्ञा का वर्णन दिया। ब्रह्मा जी ने भगवान शिव से काशी छोड़ मन्दराचल में निवास करने की आग्रह की। अतेव भगवान विश्वेश्वर ने ब्रह्मा जी की बात मानकर एवं मन्दराचल की तपस्या से संतुष्ट होकर काशी छोड़ मन्दराचल पर गमन किया। भगवान विश्वेश्वर के साथ समस्त देवगण भी मन्दराचल को प्रस्थान कर गया।

प्रतिज्ञा अनुसार राजा दिवोदास पृथ्यी पर धर्मपूर्वक राज्य करने लगा तथा दिन—प्रतिदिन महान होने लगा तथा वह राजा साक्षात् धर्मराज हो गया। इस कालावधि में भले ही भगवान विश्वेश्वर मन्दराचल में वास कर रहे थे परंतु वह काशी के वियोगजनित संताप से व्यकुल थे। अतः काशी में पुनः गमन हेतु भगवान शिव ने योगिनियों तथा विभिन्न देवताओं को भेज दिवोदास के राज्य में त्रुटि निकालने भेजा जिससे प्रतिज्ञा अनुसार राजा का उसके राज्य से उद्घासन किया जा सके एवं शिवजी काशी में पुनः आगमन कर सकें। इसका पूर्ण व्याख्यान तत्स्म्बन्धी यात्रा में दिया गया है।

7.0. द्वादश आदित्य यात्रा

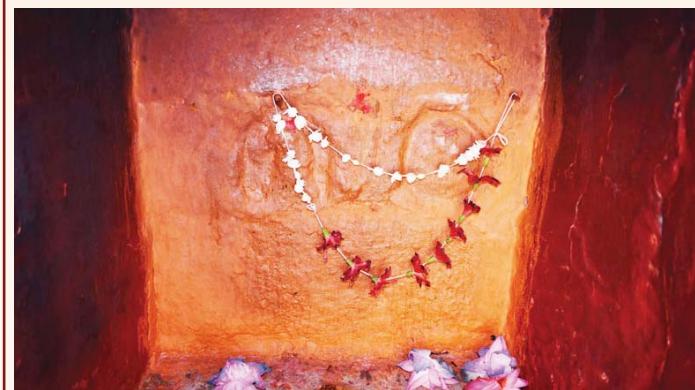
काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार जिसका उल्लेख उक्त 6.0 में वर्णित कथा में किया गया है जब काशी में दिवोदास को उसके राज्य से उद्घासित करने हेतु भगवान शिव द्वारा भेजी गई योगिनीमण्डल भी प्रत्यावर्तित न हुई तब काशी के समाचार जानने की इच्छा से शिवजी ने सूर्यदेव को काशी भेजा। काशी जैसी मुक्तिदायिनी रम्यपुरी की दर्शन—लालसा से लालित आर्कदेव का मन अत्यंत लोल हो उठा। अतः योगिनियों की भाँति सूर्य देव नाना वेश बना—बनाकर जब राजा दिवोदास के राज्य में कहीं भी कोई छिद्र न पा सके तो वह ‘बारह संख्यक’ प्रमुख अकाँ के रूप में वाराणसी के विभिन्न स्थलों में क्षेत्र—संन्यास की विधि से प्रतिष्ठित हो गये। अकाँ के द्वादश नाम निम्नवत हैं—

- लोलार्कादित्य
- उत्तरार्कादित्य

- साम्बादित्य
- द्रुपदादित्य
- मयूखादित्य
- खखोल्काआदित्य
- अरुणादित्य
- वृद्धादित्य
- केशवादित्य
- विमलादित्य
- गंगादित्य
- यमादित्य

7.1. लोलार्कादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार जब भगवान शिव ने सूर्यदेव को काशी जाकर धार्मिक राजा ‘दिवोदास’ को अपने राज्य से उद्घासन का उपाय रचने के निमित्त आज्ञा दी। तब आज्ञा अनुसार सूर्यदेव



काशी को प्रस्थान कर गये। काशी पहुँचकर सूर्यदेव काशी जैसे

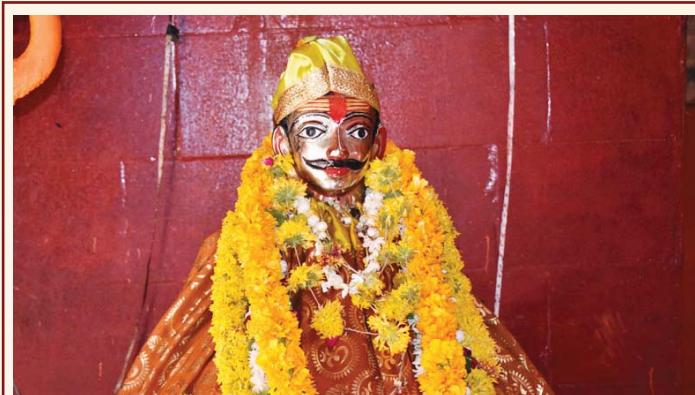
मुक्तिदायिनी रम्यपुरी की दर्शन—लालसा से अत्यंत उत्सुक हो गए। इसके पश्चात् सूर्यदेव द्वारा काशी में पहुँचकर भीतर और बाहर दोनों ही ओर विचरण करते रहने पर भी उन्हें राजा के विषय में कोई अधर्म नहीं दिखा। अन्ततोगत्वा सूर्यदेव मन्दराचल पुनरागमन की बजाए काशी में अपनी बारह मूर्तियाँ बनाकर स्थापित हो गए। क्योंकि भगवान आदित्य का मन काशी के दर्शन में अत्यंत लोल हो गया था। अतः वहाँ सूर्यदेव का नाम लोलार्क पड़ गया। मान्यता अनुसार अगहन मास के किसी आदित्यवार को सप्तमी अथवा षष्ठी तिथि को लोलार्क की वार्षिक यात्रा करके मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो सकता है तथा वह श्रद्धालु जो असिसंगम पर स्नान कर पितर

लोलार्कादित्य मंदिर

और देवताओं का तर्पण तथा श्राद्ध करता है, वह पितृ-ऋण से मुक्त हो जाता है। माघ मास की शुक्ल सप्तमी के दिन गंगा और असि के संगम पर लौलार्क कुण्ड में स्नान करने से मनुष्य अपने सात जन्म के संचित पापों से मुक्त हो जाता है। वाराणसी में लोलार्कादित्य लोलार्क कुण्ड, तुलसी घाट के समीप स्थित है। यह मंदिर दर्शन—पूजन हेतु पूरे दिन खुला रहता है।

7.2. उत्तरार्कादित्य मंदिर

काशी खण्ड के अनुसार काशी से उत्तर दिशा में आर्ककुण्ड पर सूर्य देव उत्तरार्कादित्य के रूप में विराजमान हैं। वर्तमान काल में इस कुण्ड को बकरियाकुण्ड के नाम से जाना जाता है। काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार एकदा सुलक्षणा नामक ब्राह्मण पुत्री अपने माता—पिता की मृत्यु के उपरांत सूर्य देव की उत्तरार्कादित्य के रूप में तपस्या में लीन हो गई।



उत्तरार्कादित्य मंदिर

सुलक्षणा को कठोर तपस्या में लीन देख माता पार्वती उससे अत्यंत प्रसन्न हुई तथा उन्होंने सुलक्षणा को वर माँगने को कहा। माता पार्वती के इस वचन को सुनते ही सुलक्षणा की दृष्टि उसके सामने खड़ी बकरी पर पड़ी जो उसकी तपस्या की कालावधी में प्रतिदिन आकार निश्छल भाव से खड़ी रहती थी। अतः सुलक्षणा ने अपनी जगह उस वरदान को उस बकरी को देने को माता पार्वती से कहा। उसके इस परोपकारी भाव को देख माता पार्वती उससे अत्यंत प्रसन्न हुई तथा उन्होंने सुलक्षणा को अपनी सखी होने का वरदन दिया तथा बकरी को भी यह वरदान दिया कि वह आगे चलकर काशीराज की बेटी होगी। तबसे वहाँ सूर्यदेव उत्तरार्कादित्य के रूप में स्थित हैं। मान्यता अनुसार वे श्रद्धालुओं के दुरुखसंघात को दूर हटाकर परम आनन्द देते हुए सर्वदा काशी की रक्षा करते रहते हैं। जो भी श्रद्धालु उत्तरार्कादित्य के दर्शन—पूजन करता है वह व्याधिभय अथवा दरिद्रता की बाधा से दूर रहता है। उत्तरार्कादित्य वाराणसी के समीप अलाइपुर, बकरिया कुण्ड पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु यह मंदिर प्रातः 05:00

से दोपहर 12:00 बजे तथा सायं 05:00 से रात्रि 10:00 बजे तक खुला रहता है। प्रतिदिन यहाँ प्रातः 08:00 बजे आरती होती है।

7.3. साम्बादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार एकदा ब्रह्मा के मानस पुत्र नारद मुनि द्वारकापुरी में भगवान् कृष्ण के सब कृमारों को देखने आये। देवर्षि नारद को देखते ही समस्त कृष्ण पुत्रों ने नारद मुनि को प्रणाम किया। परंतु उन सब में अपने रूप—सौन्दर्य के अभिमान से मोहित होकर साम्ब ने



साम्बादित्य मंदिर

नारद के रूप—सम्पति का उपहास करके प्रणाम नहीं किया। भगवान् श्री

कृष्ण से देवर्षि नारद ने साम्ब की चेष्टा का उल्लेख किया। साथ ही देवर्षि नारद ने श्री कृष्ण को सचेत किया कि क्योंकि साम्ब त्रैलोक्य के समस्त युवकों में सर्वार्पक्षा अत्यंत सुन्दर रूपवान है, अतः वह महल एवं उसके आस—पास के क्षेत्र की समस्त स्त्रियों को अपने रूप से मोहित कर सकता है। देवर्षि के प्रस्थान उपरांत रात्रिदिन अनुसन्धान लगते रहने पर भी कहीं पर भी साम्ब का कोई दोष न दिखा। तदान्तर जब फिर देवर्षि नारद द्वारकापुरी में पथारे तथा उन्होंने बाहर खेलते हुए साम्ब को बुलाकर श्री कृष्ण को उनकी उपस्थिति का ज्ञात कराने को कहा। स्त्रियों को संग में लेकर एकान्त में विराजमान पिता का ज्ञात होने के कारण साम्ब असमंजस में पड़ गया कि जाऊँ के नहीं? परंतु वह देवर्षि के कथन की भी अवहेलना नहीं कर सकता था, अन्तरु साम्ब ने अपने पिता के पास गमन किया। ज्यों ही साम्ब ने श्री कृष्ण के निजी कक्ष में प्रवेश किया त्यों ही नारद भी उसके पीछे वहाँ पहुँच गए। दोनों की उपस्थिति से श्री कृष्ण संग कक्ष में उपस्थित सभी स्त्रियां अत्यंत लज्जित हो गईं। नारद ने भगवान् कृष्ण को इस घटना की गलत व्याख्या देते हुए कहा कि साम्ब के अतुल सौंदर्य से मोहित होने के कारण वहाँ स्थित सभी महिलाओं के मन में चंचलता आ गयी है। क्रोधित होकर श्री कृष्ण ने पुत्र साम्ब को कुष्ठ रोग से शापित किया। परंतु जब श्री कृष्ण को यह ज्ञात हुआ कि साम्ब निर्दोष है तब उन्होंने साम्ब को इस रोग

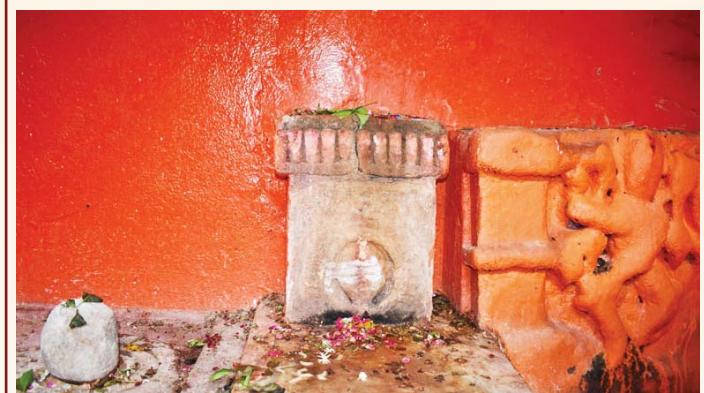
से मुक्ति हेतु काशी जाकर सूर्य की आराधना करने का उपाय दिया।

इसके अनन्तर साम्ब ने काशी में गमन कर कुण्ड बनाकर सूर्यदेव की आराधना कर कुष्ठ रोग से मुक्ति प्राप्त की। तबसे यहाँ सूर्यदेव साम्बादित्य रूप में विराजमान हैं। मान्यता अनुसार रविवार को सूर्योदय के समय साम्बादित्य की आराधना करने से सभी प्रकार के असाध्य रोगों से मुक्ति मिल जाती है। वाराणसी में साम्बादित्य क-51/90, सूर्य कुण्ड में स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 06:30 से दोपहर 01:00 बजे तथा सायं 07:00 से रात्रि 09:00 बजे तक खुला रहता है।



7.4. द्रुपदादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार जब परमप्रतापी पाण्डव अपने भाइयों की शत्रुता से की गई विपत्ति में पड़कर वनवासी हुए तब उनकी सहधर्मिणी द्रौपदी भी पति की विपत्ति से दुरुखिनी होकर काशी में पहुँच सूर्य देव की आराधना में लीन हो गई। अनन्तर द्रौपदी की आराधना



द्रुपदादित्य मंदिर

से प्रसन्न होकर सूर्यदेव से उसे बटलोही सौंपी तथा यह वरदान दिया कि जब तक द्रौपदी उस बटलोही से भोजन नहीं करेगी तब तक चाहे जितने अन्नार्थी जन हों, सभी लोग तृप्त हो जाएँगे। तब से यहाँ विराजमान सूर्य देव द्रुपदादित्य नाम से विख्यात हैं। मान्यता अनुसार विश्वेश्वर के दक्षिणभाग में स्थित द्रुपदादित्य की जो भी आराधना करता है उसे क्षुधा की बाधा कभी नहीं होती। वाराणसी में द्रौपदादित्य विश्वेश्वर मंदिर के समीप सीको 35/2, अक्षय वट पर स्थित है। यह मंदिर दर्शन—पूजा हेतु दिन भर खुला रहता है।

7.5. मयूखादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार पूर्वकाल में त्रैलोक्य विश्रुत पंचनदतीर्थ में सूर्यदेव ने गभरतीश्वर नामक महाशिवलिंग तथा सर्वदा भक्तजनों को मंगल देने वाली भगवती मंगलगौरी की स्थापना करके एक

लाख वर्ष पर्यन्त, पार्वती सहित मयूखादित्य मंदिर

भगवान शिव की आराधना करते हुए तपस्या की। इस कठोर तपस्या के द्वारा सूर्य देव अत्यंत प्रज्वलित हो उठे जिससे सचराचर त्रिभुवन भयभीत हो काँपने लगा। परमव्याकुलित संसार को देख भगवान विश्वेश्वर स्वयं सूर्य देव को वर प्रदान करने हेतु प्रकट हुए। सूर्यदेव की तपस्या से प्रसन्न हो भगवान शिव ने उनसे वरदान माँगने को कहा। तब भगवान शिव को अपने समक्ष देख सूर्यदेव उनकी एवं अर्द्धांगस्वरूपिणी गौरी देवी की स्तुति करने लगे। भगवान शिव एवं माता पार्वती ने प्रसन्न हो सूर्य देव को कई दिव्य आशीर्वाद प्रदान करें तथा यहाँ स्थापित सूर्यदेव मयूखादित्य के नाम से विख्यात हुए। मान्यता अनुसार मयूखादित्य के दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को कोई व्याधि नहीं होती तथा रविवार को दर्शन—पूजन करने से कभी दिव्रिता नहीं होती। वाराणसी में मयूखादित्य के 24/34, मंगला गौरी मंदिर, पंचगंगा घाट पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजा हेतु मंदिर प्रातः 05:00 से दोपहर 01:00 बजे तथा सायं 03:00 से रात्रि 10 बजे तक खुला रहता है। यहाँ सायंकाल में आरती होती है।

7.6. खखोल्काआदित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार पूर्वकाल में दक्षप्रजापति की कदरु एवं विनता नामक दो पुत्रियां थीं जो मरीचि के पुत्र प्रजापति कश्यप विवाहित थीं। एक बार वे दोनों परस्पर क्रीड़ा—कौतुक हुई कथोपकथन करने लगी जिसमें कदरु ने विनता से प्रश्न किया कि सूर्य देव के रथ में जो उच्चौरुश्वा नामक अश्व है वह चितकबरा है या श्वेतवर्ण है? साथ ही कदरु ने यह शर्त रखी कि जो भी हार जाएगी वह जीतने वाली की दासी बन जाएगी। इस प्रकार कदरु एवं विनता के पणबन्ध हो जाने पर कदरु ने चितकबरा तथा विनता ने श्वेतवर्ण कहा। तदुपरांत कदरु ने अपने सर्प पुत्रों को यह आदेश दिया कि वह उच्चौरुश्वा के पास जाए तथा उसकी पूँछ में लिपट कर उसके बालों को काला कर दें एवं अपने विषैले

मोक्ष का पथ

फुफकारों से उसके सर्वांग में रोमों को भी काला कर दें। सर्प पुत्रों ने माता के आदेश अनुसार किया। परिणामस्वरूप कदरु एवं विनता को आकाश में सूर्य देव के रथ में जाते हुए उच्चौरुश्वा चितकबरा रंग का दिखा। परिणामतः शर्त अनुसार कदरु विजयी हुए तथा विनता को उसकी दासी बनना पड़ा। तदुपरान्त विनता कदरु की सेवकाई करने लगी। परंतु विनता उदास रहने लगी।



खेमेक्खलाक्ष्मी मंदिर

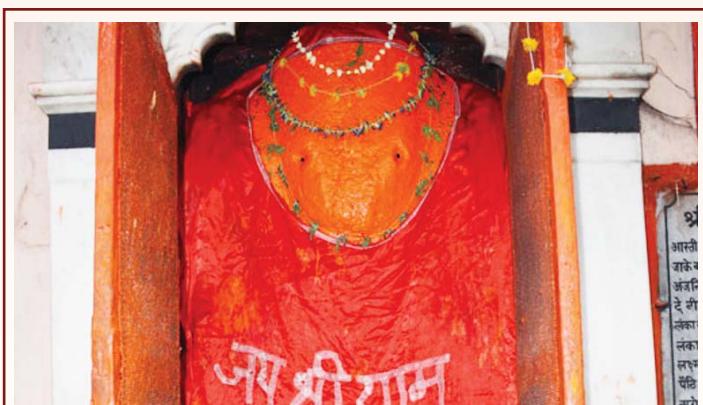
प्रतिदिन अपनी माँ को उदास देख गरुड़ ने उसकी उदासीनता का कारण पूछा जिससे उसे यह ज्ञात हुआ कि विनता शर्त अनुसार कदरु की दासी होने के कारण ही उदास रहती है। यह ज्ञात होते ही गरुड़ ने अपने माता से कहा कि वह कदरु के पुत्रों से पूछे कि वह उससे क्या लेकर विनता को दासीत्व से मुक्त करेंगे। कथनानुसार विनता ने वैसे ही किया। इसपर कदरु के सर्प पुत्रों ने अमृत पाकर विनता को दासीत्व से मुक्त करने का वचन दिया। अतः गरुड़ अपनी माता को दासीत्व से मुक्त कराने हेतु अमृत लेने देवताओं के पास स्वर्ग में गमन किया। वहाँ अपनी बुद्धिमत्ता से गरुड़ ने अमृत कलश प्राप्त कर लिया। जब इस बात का ज्ञात भगवान विष्णु को हुआ तब गरुड़ एवं भगवान विष्णु के बीच भारी युद्ध हुआ। संग्राम में गरुड़ का बलवान भाव देख भगवान विष्णु उससे अत्यंत प्रसन्न हुए तथा उसे वरदान माँगे को कहा जिसके उत्तर में गरुड़ ने भगवान विष्णु से ही वरदान माँगने को कहा। अतः भगवान विष्णु ने उत्तर में उससे दो वरदान माँगे। पहला यह कि गरुड़ सर्पों को अमृत दिखलाकर अपनी माता को दासीत्व से मुक्त करेगा परंतु सर्प अमृत न पी पायें, तथा दूसरा वरदान यह माँगा कि वह अमृत देवताओं को लौटा देगा। भगवान विष्णु को यह दो वरदान देकर गरुड़ ने सर्पों के पास अपनी माता को दासीत्व से छुड़ाने हेतु गमन किया। सर्पों के पास पहुँचकर उन्हें अमृत कलश सौंप के गरुड़ ने वचन अनुसार अपनी माता को दासीत्व से मुक्त करा लिया।

अनन्तर जब सर्पलोग अमृत का सेवन करने चले तब उन्हें अमृत सेवन से रोकने हेतु गरुड़ ने यह कहा कि बिना नहाये—धोये अशुद्ध लोगों के छू लेने से अमृत गायब हो जाएगा। उधर ज्यों ही सर्पगण नहाने को गये, त्यों ही भगवान विष्णु अमृतपात्र लेकर प्रस्थान कर गये। इधर जब सर्पगण नहाकर वापस आए तब अमृत गायब था। यह देख वे सब अमृत के स्पर्शमात्र की इच्छा से कुशां (जिसपर अमृत रखा था) को चाटने लगे, इससे सर्पों को अमृत तो प्राप्त नहीं हुआ परंतु उनकी जीभ कटकर दो टुकड़ों में हो गई।

जब विनता दासीत्व से मुक्त हो गई तब वह अपने दास्यरूप पाप के शान्त्यर्थ वह काशी में जाकर खेमेक्खला नामक आदित्य की प्रतिमा प्रतिष्ठित कर घोर तपस्या में लीन हो गई। विनता की तपस्या से प्रसन्न हो सूर्यदेव वरदान स्वरूप वहाँ स्थित हो गए तथा खेमेक्खलादित्य नाम से विख्यात हुये। मान्यता अनुसार खेमेक्खलादित्य श्रद्धालुओं के विघ्नरूप अन्धकार को दूर करते हैं। इनके दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को समस्त पापों से मुक्ति मिलती है। वाराणसी में खेमेक्खलादित्य त्रिलोचन के उत्तर में कामेश्वर मंदिर, ऐ-२/९ पर स्थित है। खेमेक्खलादित्य श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु प्रातः ५:०० से दोपहर १२:०० बजे तक एवं सायं ०५:०० से रात्रि १०:०० बजे तक खुलता है। यहाँ प्रातः ५:३० बजे मंगल आरती तथा सायं ०९:३० बजे शयन आरती होती है।

7.7. अरुणादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार कश्यप महर्षि की दो अर्धांगिनी थी जिनका नाम कदरु व विनता था। कदरु के गर्भ से सौ सर्पपुत्र हुए तथा विनता को तीन अर्थात उलूक, अरुण एवं गरुड़ नामक पुत्र हुए। पक्षीराज के रूप में बैठे उलूक को “निर्गुण” कहकर पक्षी गण ने उसे गद्दी से उतार दिया। द्वितीय बार गर्भवती हुई विनता ने पुत्र मुख दर्शन की



अरुणादित्य मंदिर

ग्रोश का पथ

लालसा से गर्भपाक में ही अंडा फोड़ दिया। उसमें अरुण उत्पन्न हुआ। गर्भ की परिपक्वता से पूर्व उत्पन्न किए जाने के कारण अरुण विकृत जन्मा। उसके जंघा के ऊपर का भाग पूर्णतः विकसित हो चुका था परंतु नीचे का भाग अविकसित था। अर्द्धनिष्ठन्न गर्भ से जन्म लेते ही अरुण ने क्रोधित हो अपनी माता विनता को शाप दिया कि वह कदर की दासी बनेगी। विनता द्वारा शाप-मुक्ति की प्रार्थना करने पर अरुण ने अपनी माता से यह कहा कि यदि वह तीसरे अंडे को समय पूर्ण होने पर ही फोड़ेगी तो उस गर्भ से जन्मा पुत्र ही उसे दास्यभाव से मुक्ति दिलाएगा। यह कहकर अरुण प्रस्थान कर गया तथा उसने काशी में गमन कर वहाँ भगवान आदित्य की प्रतिमा स्थापित कर घोर तपस्या की जिसके परिणाम स्वरूप सूर्यदेव ने उससे प्रसन्न होकर उसे ढेरों वरदान प्रदान किए तथा वहाँ स्थित हो अरुणादित्य के नाम से विख्यात हुए। वाराणसी में अरुणादित्य ऐ-२४८०, त्रिलोचन घाट पर स्थित त्रिलोचन मंदिर में स्थापित है। श्रद्धालुओं के दर्शन-पूजन हेतु मंदिर प्रातः ०५.३० से १२.०० बजे एवं सायं ०५.०० से ११ बजे तक खुला रहता है। यहाँ प्रातः ०५.३० बजे मंगल आरती तथा रात्रि ११.०० बजे शयन आरती होती है।

७.८. वृद्धादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार पूर्वकाल में वाराणसी में 'वृद्धहारीत' नामक एक ब्राह्मण एकदा काशी में विशालाक्षी देवी के दक्षिण



वृद्धादित्य मंदिर

ओर सूर्यदेव की प्रतिमा स्थापित कर उनकी भक्तिपूर्वक उग्र तपस्या में लीन हों गया जिससे प्रसन्न हों सूर्यदेव स्वयं उसके समक्ष प्रकट हुए तथा वृद्धादित्य को सौंदर्यपुञ्जय तारण्य का वर दिया तथा वहीं स्थापित हों गए। यहाँ सूर्यदेव वृद्धादित्य के नाम से विख्यात हैं। मान्यता अनुसार वृद्धादित्य के दर्शन-पूजन से श्रद्धालु दुर्गति एवं रोगों से मुक्त हो सिद्धि की प्राप्ति करते हैं। वाराणसी में वृद्धादित्य डी-३/१५, बड़े हनुमानजी के

दक्षिण में मीर घाट पर स्थित हैं। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन-पूजन हेतु मंदिर प्रातः ०६.३० से रात्रि ०९.३० तक खुलता है। उपरोक्त समयावली स्थिति अनुसार बदली जा सकती है।

७.९. केशवादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार एकदा आकाश में विचरण करते हुए भगवान सूर्य ने भगवान विष्णु को भगवान शिव की आराधना करते



केशवादित्य मंदिर

देखा। यह जानने की उत्सुकता में कि सर्वपूज्य विष्णु किसकी पूजा में लीन हैं सूर्यदेव भगवान विष्णु के समीप गए। सूर्यदेव के पूछने पर आदिकेशव ने भगवान सूर्य को बताया कि वाराणसी पुरी में एकमात्र शिव ही सर्वपूजनीय हैं तथा उन्हीं की अर्चना से श्रीकेशव को भी वैभव प्राप्त है। उनके पूजन से सैंकड़ों जन्म के अर्जित पाप मुक्त हो जाते हैं। श्रीकेशव के इस उपदेश का श्रवण करने के उपरांत सूर्यदेव आदिकेशव को अपना गुरु मानकर शिवलिंग की पूजा करने लगे। उस दिन से यहाँ स्थित भगवान आदित्य केशवादित्य नाम से विख्यात हैं। मान्यता अनुसार केशवादित्य की पूजा करने से श्रद्धालुओं को अपार ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा अपने समस्त पापों से मुक्ति मिल जाती है। वाराणसी में केशवादित्य ऐ-३७/५१, आदि केशव मंदिर, राजघाट कीले पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन-पूजन हेतु मंदिर प्रातः ६.०० से दोपहर १२.०० बजे तथा सायं ४.०० से रात्रि १०.०० बजे तक खुला रहता है।

७.१०. विमलादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार पूर्वकाल में विमल नामक एक क्षत्रीय, पर्वतीय व्यक्ति था जो पूर्वजन्मार्जित कर्मफल से कुष्ठ रोग ग्रस्त हो गया था। अतः वह गृह, परिवार, धन आदि का त्याग कर काशी में गमन कर सूर्य की उपासना करने लगा। वह नित्य सूर्यदेव की विभिन्न पुष्ट आदि से विधिवत आराधना करता था। परिणामतः प्रसन्न होकर सूर्य देव ने अपनी

मोक्ष का पथ



विमलादित्य मंदिर

कृपा से विमल को कुष्ठ रोग से मुक्त कर दिया। सूर्यदेव विमल को वरदान देकर वहीं स्थित हो गए तथा विमलादित्य नाम से विख्यात हुए। मान्यता अनुसार विमलादित्य के दर्शन मात्र से श्रद्धालुओं को कुष्ठ रोग से मुक्ति मिलती है तथा उनको निर्मल शुद्धि की प्राप्ति होती है। वाराणसी में विमलादित्य डी-35 / 273, खरी कुआँ के पीछे की गली में जंगमबाड़ी, गोदौलिया के पास स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर दिन भर खुला रहता है।

7.11. गंगादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार जब पवित्र गंगा का आगमन वाराणसी में हुआ तब गंगा की स्तुति करने हेतु सूर्यदेव वहाँ पहुँचे तथा मान्यता अनुसार आज तक वहीं स्थित होकर गंगा—स्तुति कर रहे हैं। यहाँ स्थित भगवान आदित्य गंगादित्य नाम से विख्यात हैं। ऐसी मान्यता है कि गंगादित्य के दर्शन मात्र से श्रद्धालुओं की दुर्गति एवं रोग नष्ट हों जाते

हैं। वाराणसी में गंगादित्य 1 / 68, नेपाली मंदिर के नीचे, ललिता घाट पर स्थित है। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर दिन भर खुला रहता है।

7.12. यमादित्य मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार पूर्वकाल में यमघाट पर यमराज ने 'यमेश्वर' शिवलिंग तथा 'यमादित्य' नामक सूर्यदेव की प्रतिमा



यमादित्य मंदिर

स्थापित कर आराधना की थी।

मान्यता अनुसार यमतीर्थ में स्नान

करने के उपरांत यमादित्य के दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को यम के दर्शन नहीं होते। साथ ही यमतीर्थ में मंगलवार और भरनी नक्षत्रयुक्त चतुर्दशी तिथि पर पिण्डदान करके मनुष्य पितरों के ऋण से मुक्त हो सकते हैं। वाराणसी में यमादित्य सीके-7 / 135, संकठा घाट की ओर जाने वाली सीढ़ीयों पर स्थित हैं। श्रद्धालुओं के दर्शन—पूजन हेतु मंदिर दिन भर खुला रहता है।

8.0. अष्ट विनायक यात्रा

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार जिसका उल्लेख उक्त 6.0 में वर्णित कथा में किया गया है जब भगवान शिव द्वारा काशी में दिवोदास का उसके राज्य से उद्वासन हेतु भेजी योगिनियाँ एवं सूर्यदेव विफल रहे तब भगवान शिव के आदेश अनुसार भगवान गणेश मन्दराचल छोड़ वाराणसी आए। वाराणसी में अपनी माया का जाल फैलाकर गणेश जी ने दिवोदास की प्रजा को, नागरिकों को आदि को अपने वश में किया तथा रानी, राजा को भी उद्ब्रेजित किया। तदनन्तर भगवान गणेश अपने को सफल मानकर अपनी अनेक मूर्तियों (छप्पन विनायकों) के रूप में वाराणसी में स्थित हो गये। काशी में स्थित इन छप्पन विनायकों की यात्रा महाफलप्रद मानी जाती हैं। उन छप्पन विनायकों में से श्री गणेश के आंठ स्वरूपों को अष्ट विनायक यात्रा में समिलित किया गया है। मान्यता अनुसार अष्ट विनायक की यात्रा



गंगादित्य मंदिर

गोकु का पथ

से श्रद्धालुओं के समस्त विघ्न दूर हो जाते हैं तथा उन्हें समृद्धि एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है। अष्ट विनायक यात्रा में विनायक के निम्न स्वरूप सम्मिलित हैं—

- i. अर्क विनायक
- ii. दुर्ग विनायक
- iii. चण्ड विनायक
- iv. देहली विनायक
- v. उद्धण्ड विनायक
- vi. पाशपाणि विनायक
- vii. खर्व विनायक
- viii. सिद्ध विनायक

8.1. अर्क विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का अर्क विनायक स्वरूप अष्ट विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो गंगा एवं असि के संगम पर स्थित है। मान्यता अनुसार अर्क विनायक के दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को सुख, समृद्धि एवं फल की



अर्क विनायक मंदिर

प्राप्ति होती है। अर्क विनायक विघ्न हरता के रूप में पूजे जाते हैं तथा यह अपने भक्तों की रक्षा करने के लिए विख्यात है। गुरु पुर्णिमा के दिन अर्क विनायक की आराधना का विशेष महत्व है। वाराणसी में अर्क विनायक 2/17, लोलार्क कुण्ड के पास स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर दिन भर खुला रहता है। मान्यता अनुसार रविवार को यहाँ पूजा करने का विशेष महत्व है।

8.2. दुर्ग विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का दुर्ग विनायक स्वरूप अष्ट विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो दुर्गा कुण्ड क्षेत्र के दक्षिण भाग में स्थित है। मान्यता अनुसार दुर्ग विनायक की यात्रा से श्रद्धालुओं की दुर्गतियों का विनाश होता है, साथ ही श्रद्धालुओं की मान—प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। वाराणसी में दुर्ग



दुर्ग विनायक मंदिर

विनायक मंदिर 27/1, दुर्गा कुण्ड के पीछे स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा

दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 04.00 से दोपहर 12.00 बजे तथा सायं 04.00 से रात्रि 10.00 बजे तक खुला रहता है। यहाँ प्रतिदिन प्रातः 05:00 बजे मंगला आरती होती है, दोपहर 12:00 बजे भोग आरती होती है, सायं 07:00 बजे सध्या आरती तथा रात्रि 10:00 बजे शयन आरती होती है।

8.3. चण्ड विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन

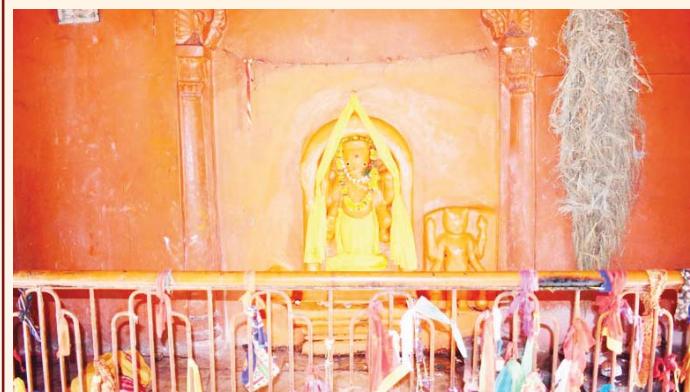


चण्ड विनायक मंदिर

विनायकों में से श्री गणेश का चण्ड विनायक स्वरूप अष्ट विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो भीमचंडी क्षेत्र के दक्षिण—पश्चिम भाग में स्थित है। मान्यता अनुसार इनके दर्शन मात्र से चण्ड विनायक अपने श्रद्धालुओं के बड़े से बड़े भय को नष्ट कर देते हैं। चण्ड विनायक मंदिर वाराणसी के बाहरी इलाके में पंचक्रोशी मार्ग पर स्थित है। यह मंदिर भीमचंड विनायक नाम से भी ख्याति प्राप्त है। यह मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

8.4. देहली विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का देहली विनायक स्वरूप अष्ट विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो काशी की पश्चिमी सीमा पर स्थित है। मान्यता अनुसार देहली विनायक अपने श्रद्धालुओं के जीवन मार्ग के समस्त विघ्नों का निवारण कर देते हैं।



देहली विनायक मंदिर

देहली विनायक मंदिर वाराणसी से लगभग 20 किमी की दूरी पर एक गाँव में स्थित है। यह मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

8.5. उद्दण्ड विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का उद्दण्ड विनायक स्वरूप अष्ट विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो काशी की उत्तर पश्चिमी दिशा में रामेश्वर मंदिर से 1 किमी पहले स्थित है। यहाँ स्थापित भगवान गणेश की प्रतिमा के बारह हाथ हैं। मान्यता अनुसार उद्दण्ड विनायक के दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को बड़े उद्दण्ड विघ्नों से भी मुक्ति मिलती है। उद्दण्ड विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।



उद्दण्ड विनायक मंदिर

8.6. पाशपाणि विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का पाशपाणि विनायक स्वरूप अष्ट विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो काशी की उत्तरादिशा में पाशपाणि छावनी क्षेत्र में नेहरू पार्क से 100 मीटर की दूरी पर स्थित है। मान्यता अनुसार यहाँ



पाशपाणि विनायक मंदिर

दर्शन—पूजन करने से श्रद्धालुओं को सभी विघ्नों से मुक्ति मिलती है तथा उनके जीवन में खुशहाली बनी रहती है। पाशपाणि विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

8.7. खर्व विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का खर्व विनायक स्वरूप अष्ट विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में केशव मंदिर के निकट राजघाट किले में स्थित



खर्व विनायक मंदिर

है। मान्यता अनुसार खर्व विनायक के दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं के बड़े से बड़े विघ्न भी छोटे हो जाते हैं तथा कष्टों से मुक्ति मिलती है। खर्व विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

8.8. सिद्ध विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का सिद्ध विनायक स्वरूप अष्ट विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो यमतीर्थ के पश्चिमी ओर सीके—9/1, मणिकर्णिका कुण्ड में सीढ़ीओं पर स्थित है। मान्यता अनुसार सिद्ध विनायक के दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को सिद्धियों की प्राप्ति होती है। सिद्ध विनायक मंदिर



सिद्ध विनायक मंदिर

श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

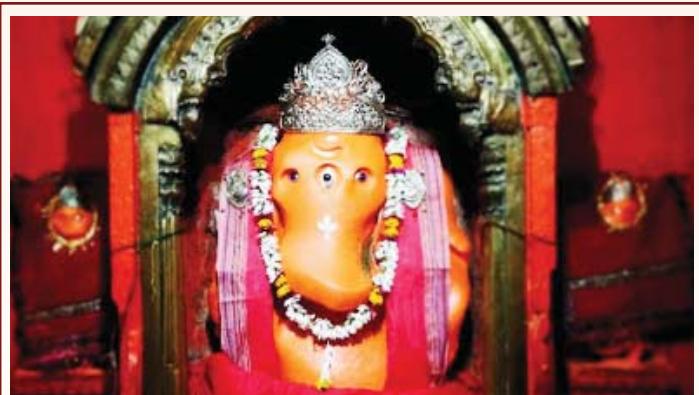
9.0. अष्ट प्रधान विनायक यात्रा

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान गणेश अपनी अनेक मूर्तियों (छप्पन विनायकों) के रूप में वाराणसी में विराजमान हो गये जिसका उल्लेख उत्तर 8.0 में वर्णित कथा में किया गया है। काशी में स्थित इन छप्पन विनायकों की यात्रा महाफलप्रद मानी जाती है। उन छप्पन विनायकों में से श्री गणेश के प्रमुख आठ स्वरूपों को अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में सम्मिलित किया गया है। मान्यता अनुसार अष्ट प्रधान विनायक की यात्रा से श्रद्धालुओं के समस्त विघ्न दूर हो जाते हैं तथा उन्हें समृद्धि, सिद्धि एवं ज्ञान की प्राप्ति होती है। अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में विनायक के निम्न स्वरूप सम्मिलित हैं :

- i. सिद्ध विनायक
- ii. त्रिसन्ध्य विनायक
- iii. आशा विनायक
- iv. क्षिप्र प्रसाधन विनायक
- v. ढुण्डिराज विनायक
- vi. वक्रतुण्ड विनायक
- vii. ज्ञान विनायक
- viii. अविमुक्त विनायक

9.1. सिद्ध विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का सिद्ध विनायक स्वरूप अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो यमतीर्थ के पश्चिमी ओर सीके—9/1,



सिद्ध विनायक मंदिर

मोक्ष का पथ

मणिकर्णिका कुण्ड के समीप सीढ़ीयों पर स्थित है। मान्यता अनुसार सिद्ध विनायक के दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को सिद्धियों की प्राप्ति होती है। सिद्ध विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

9.2. त्रिसन्ध्य विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का त्रिसन्ध्य विनायक स्वरूप अष्ट प्रधान



त्रिसन्ध्य विनायक मंदिर

विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में सीके—140 लाहौरी टोला पर स्थित है। त्रिसन्ध्य का हिन्दी अर्थ दिन के तीन पहर माने जाते हैं, सुबह, दोपहर एवं शाम। “त्रि” का अर्थ तीन होता है एवं “संधि” का अर्थ “मिलाप”। अतः यह ऐसा समय होता है जब ब्रह्मांडीय संक्रमण होता है (रात से सुबह, सुबह से दोपहर एवं दोपहर से रात)। यह तीनों पहर प्रार्थना करने के लिए शुभ माने जाते हैं। मान्यता अनुसार त्रिसन्ध्य विनायक के दर्शन—पूजन से ज्ञान की प्राप्ति होती है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 05:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक एवं सायं 04:00 बजे से रात 08:00 बजे तक खुला रहता है।

9.3. आशा विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का आशा विनायक स्वरूप अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में डी—3471, मीर घाट पर स्थित है। मान्यता अनुसार आशा विनायक की आराधना से श्रद्धालुओं की सभी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 07:00 बजे से दोपहर 01:00 बजे तक एवं सायं 04:00 बजे से रात्रि 09:00 बजे तक खुला रहता है।



आशा विनायक मंदिर

9.4. क्षिप्र प्रसाधन विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का क्षिप्र प्रसाधन विनायक स्वरूप अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में सी—18 / 47, पितर कुण्ड,



क्षिप्र प्रसाधन विनायक मंदिर

पित्रेश्वर मंदिर में स्थित है।

मान्यता अनुसार क्षिप्र प्रसाधन

विनायक काशी नगरी की रक्षा करते हैं। इनकी पूजा करने से सभी सिद्धियों की प्राप्ति होती है। क्षिप्र प्रसाधन विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

9.5. दुष्पिंद्राज विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का दुष्पिंद्राज विनायक स्वरूप अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर

मोक्ष का पथ



दुष्टिराज विनायक मंदिर

के मुख्य द्वार-1 पर स्थित हैं। उक्त 8.0 में उल्लिखित कथा के अनुसार जब भगवान गणेश राजा दिवोदास के राज्य में दोष ढूँढने में सफल हो गये तब वह अपनी अनेक मूर्तियों (छप्पन विनायकों) के रूप में वाराणसी में विराजमान हो गये। तदुपरान्त भगवान विष्णु ने वचनानुसार राजा दिवोदास को उसके राज्य से उच्चाटित कर दिया तथा भगवान विश्वकर्मा द्वारा काशी के पुनः निर्माण के उपरांत भगवान विश्वनाथ समस्त देवगण के साथ स्वयं मन्दराचल से वाराणसी में आये। काशी में प्रवेश करते ही भगवान विश्वेश्वर ने प्रथमतः गणनायक की स्तुति की तथा दुष्टिराज स्तोत्र का उच्चारण करते हुये यह कहा कि यहां भगवान गणेश दुष्टिराज नाम से विख्यात होंगे तथा जो भक्त काशीपुरी में भगवान विश्वेश्वर से पूर्व दुष्टिराज विनायक का दर्शन—पूजन करेगा वह भगवान विश्वेश्वर का सम्पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करने में सफल हो पायेगा। मान्यता अनुसार जो मनुष्य दुष्टिराज विनायक की नित्य आराधना करता है उसे कष्टों से मुक्ति मिलती तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। दुष्टिराज विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

9.6. वक्रतुण्ड विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का वक्रतुण्ड विनायक स्वरूप अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में के—58 / 101, लोहटिया बड़ा गणेशजी पर स्थित है। मान्यता अनुसार वक्रतुण्ड विनायक अपने श्रद्धालुओं के पापों का हरण कर लेते हैं तथा उनकी सभी मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 04:45 बजे से रात्रि 10:30 बजे तक खुला रहता है। यहां प्रातः 04:45 बजे मंगला आरती, 10:30 बजे भोग आरती तथा रात्रि 10:30 बजे शयन आरती होती है। यहां बुधवार को रात्रि 11:30 बजे विशेष आरती होती है।

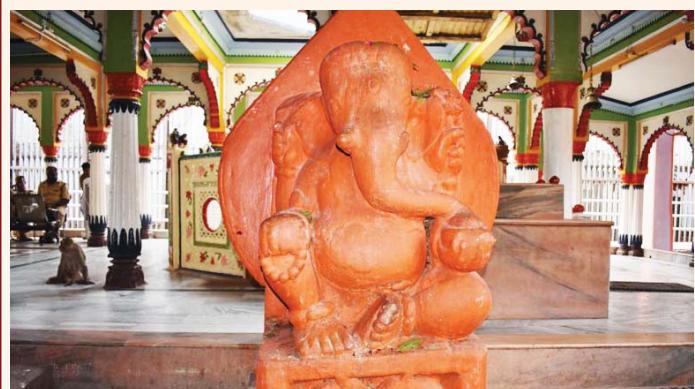


वक्रतुण्ड विनायक मंदिर

9.7. ज्ञान विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा

के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का ज्ञान विनायक स्वरूप अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में खोवा गली चौराहे पर सीके—28 / 4 में ज्ञानवापी कूप के निकट स्थित है।



ज्ञान विनायक मंदिर

मान्यता अनुसार ज्ञान विनायक

काशी की बुरी शक्तियों से रक्षा करते हैं। भगवान गणेश के इस रूप की आराधना करने से भक्तों को ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता का वरदान प्राप्त होता है।

9.8. अविमुक्त विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का अविमुक्त विनायक स्वरूप अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में सम्मिलित है। ऐसा कहा जाता है कि वास्तविक अविमुक्त विनायक की प्रतिमा अब यहां स्थित नहीं है। अब दो स्थानों पर अविमुक्त विनायक की प्रतिमा स्थापित है। एक प्रतिमा ज्ञानवापी मस्जिद की दीवार

पर स्थित है व दूसरी विश्वेश्वर (विश्वनाथ) मंदिर के परिसर में स्थित है। मान्यता अनुसार अविमुक्त विनायक श्रद्धालुओं के समस्त कष्टों को दूर कर देते हैं।

10. एकादश विनायक यात्रा

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान गणेश अपनी अनेक मूर्तियों (छप्पन विनायकों) के रूप में वाराणसी में विराजमान हो गये जिसका उल्लेख उक्त 8.0 में वर्णित कथा में किया गया है। काशी में स्थित इन छप्पन विनायकों की यात्रा महाफलप्रद मानी जाती है। मान्यता अनुसार एकादश विनायक यात्रा उन लोगों के लिए फलदायी है जो शारीरिक अस्थिरता के कारण छप्पन विनायक दर्शन यात्रा नहीं कर सकते हैं। यह काशी के प्रमुख मंदिरों में गिने जाते हैं तथा सिद्धपीठ माने जाते हैं, जहाँ गणपति—मंत्र की सिद्धि पूरी श्रद्धा के साथ की जाती है। ग्यारह रुद्र गणेश या एकादश विनायक निम्न प्रकार हैं—

- i. दुष्ठिराज विनायक
- ii. हरिश्चन्द्र विनायक
- iii. कपर्दि विनायक
- iv. बिन्दु विनायक
- v. सेना विनायक
- vi. सीमा विनायक
- vii. चिंतामणि विनायक
- viii. महाराज विनायक (बड़ा गणेश)
- ix. मित्र विनायक
- x. कुडिताक्ष विनायक
- xi. भगीरथ विनायक

10.1. दुष्ठिराज विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का दुष्ठिराज विनायक स्वरूप अष्ट प्रधान विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर के मुख्य द्वार—1 पर स्थित हैं। उक्त 8.0 में उल्लिखित कथा के अनुसार जब भगवान गणेश राजा दिवोदास के राज्य में दोष ढूँढ़ने में सफल हो गये तब वह अपनी अनेक मूर्तियों (छप्पन विनायकों) के रूप में वाराणसी में विराजमान हो गये। तदुपरान्त भगवान विष्णु ने वचनानुसार राजा दिवोदास को उसके राज्य से उच्चाटित कर दिया तथा भगवान विश्वकर्मा द्वारा काशी के पुनः निर्माण के उपरांत भगवान विश्वनाथ समस्त देवगण के साथ स्वयं मन्दराचल से वाराणसी में आये। काशी में प्रवेश करते ही भगवान विश्वेश्वर

ने प्रथमतः गणनायक की स्तुति की तथा दुष्ठिराज स्तोत्र का उच्चारण करते हुये यह कहा कि यहाँ भगवान गणेश दुष्ठिराज नाम से विख्यात होंगे तथा जो भक्त काशीपुरी में भगवान विश्वेश्वर से पूर्व दुष्ठिराज विनायक का दर्शन—पूजन करेगा वह भगवान विश्वेश्वर का सम्पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करने में सफल हो पायेगा। मान्यता अनुसार जो मनुष्य दुष्ठिराज विनायक की नित्य आराधना करता है उसे कष्टों से मुक्ति मिलती तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। दुष्ठिराज विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

10.2. हरिश्चन्द्र विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का हरिश्चन्द्र विनायक स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में संकटा घाट पर संकटा देवी मंदिर के समीप स्थित है। इस विनायक का नाम एक महान भारतीय राजा हरिश्चन्द्र के नाम पर रखा गया है जिसने ऋषि विश्वामित्र को दिए वचन की पूर्ति करने के लिए अपने साम्राज्य का त्याग एवं अपने परिवार का विक्रय कर दिया था और वह खुद दास बनने को तैयार हो गया। राजा द्वारा हमेशा सत्य के पथ पर चलने के रूपमात्र के कारण इन्हें “सत्यवादी हरिश्चन्द्र” के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता अनुसार यहाँ आराधना करने वाले भक्तों को सत्य की राह चुनने की शक्ति, वरदान स्वरूप प्राप्त होती है। साथ ही यह मंदिर मनुष्यों को यह संदेश भी देता है कि आगर हर कोई सत्य की राह पर चलने लगे तो पूरी मानवजाति समृद्ध हो जाएगी। हरिश्चन्द्र विनायक मंदिर में श्रद्धालु प्रातः 05:00 से दोपहर 12:00 बजे तथा सायं 4:00 बजे से रात्रि 10:00 बजे तक दर्शन—पूजन कर सकते हैं।

10.3. कपर्दि विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का कपर्दि विनायक स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है, जो वाराणसी में सी—21 / 40, पिशाच मोचन कुण्ड के समीप स्थित है। मान्यता अनुसार पूर्वकाल में एक विख्यात कपर्दि नामक महामुनि थे जिनके उन्नायक अर्थात् ऋषि वाल्मीकि काशी में निवास करते थे। एकदा एक घृणित एवं क्रूर पिशाच काशी में ऋषि वाल्मीकि के समक्ष प्रकट हुआ। ऋषि से समाधान की प्रार्थना करते हुए पिशाच ने ऋषि को बताया कि जब वह पवित्र गोदावरी नदी के तट पर निवास करता था तब उसने कई पाप किए जिसके परिणाम स्वरूप उसे पिशाच योनि प्राप्त हुई जिससे वह मुक्ति प्राप्त करने वहाँ आया है। समाधान के रूप में ऋषि ने पिशाच को विमल कुण्ड में स्नान करने के उपरांत अविमुक्त क्षेत्र में स्थित कपर्दीश्वर लिंग सहित भगवान विनायक की आराधना करने की सलाह दी। ऋषि के कथन अनुसार पिशाच ने वही किया तथा फलस्वरूप उसे

पिशाच योनि से मुक्ति प्राप्त हुई। तबसे विमल कुण्ड के ऊपर स्थित यह स्थान पिशाच मोचन कुण्ड के नाम से विख्यात हुआ। मान्यता अनुसार जो भी मनुष्य यहां कपर्दीश्वर लिंग तथा विनायक की पूजा करता है उसे अपनी भावनाओं एवं क्रोध पर पूर्ण रूप से नियंत्रण प्राप्त हो जाता है। साथ ही उन्हें अपने समस्त पापों से मुक्ति मिल जाती है। कपर्दि विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

10.4. बिन्दु विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छपन विनायकों में से श्री गणेश का बिन्दु विनायक स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है, जो वाराणसी में के—22 / 37, पंचगंगा घाट के समीप स्थित है। मान्यता अनुसार पूर्वकाल में अग्नि बिन्दु ऋषि नामक एक ऋषि थें, जो नेपाल में स्थित मुक्तिनाथ में गण्डक नदी के तट पर भगवान विष्णु की तपस्या में तल्लीन थें। ऋषि की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने ऋषि को वरदान दिया तथा यह निर्देश दिया कि वह भगवान विष्णु की एक प्रतिमा काशी में स्थापित करे जो ऋषि के आधे नाम बिन्दु तथा भगवान विष्णु के आधे नाम माधव को मिलकर अर्थात् बिन्दु माधव से विख्यात होगी। भगवान के निर्देशानुसार ऋषि ने ऐसा ही किया, परंतु मान्यता अनुसार हर महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ करने से पूर्व भगवान गणेश का नाम लेना चाहिए इसलिए ऋषि बिन्दु ने भी बिन्दु माधव की प्रतिमा स्थापित करने से पूर्व बिन्दु विनायक की प्रतिमा मंदिर के पिछले भाग में स्थापित कर दी तथा उसकी पूजा करने लगे। अतः यह प्रतिमा बिन्दु विनायक नाम से विख्यात हुई। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 04.00 से दोपहर 12.00 बजे तथा सायं 04:00 से रात्रि 10:00 बजे तक खुला रहता है।

10.5. सेना विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छपन विनायकों में से श्री गणेश का सेना विनायक स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है, जो वाराणसी में संकठा घाट के समीप स्थित है। मान्यता अनुसार द्वापर युग में महाभारत की कालावधि में कुरुक्षेत्र में जब पाण्डवों की सेना समाप्त हो गई तब युद्ध में पराजय होने के भय से एवं समाधान पाने की इच्छा से पाण्डव शिव नगरी काशी पहुंचे। उन्हें विश्वास था कि शिव की नगरी में कोई न कोई समाधान अवश्य प्राप्त होगा। काशी में प्रवेश के उपरांत वह जब हरिश्चन्द्र महादेव के पास संकठा घाट पर विश्राम कर रहे थें तभी उन्हें सेना विनायक की प्रतिमा दिखी। वह सेना विनायक के शुभ दर्शन से मंत्रमुग्ध हो गए तथा उन्होनें भगवान विनायक से युद्ध में विजयी होने की प्रार्थना की। ऐसा माना जाता है कि सेना विनायक के आशीर्वाद से ही पाण्डवों को युद्ध के लिए सेना प्राप्त हुई तथा वह युद्ध में विजयी हुए। तभी से यहां स्थित भगवान गणेश का यह स्वरूप सेना विनायक के नाम से

विख्यात है तथा भक्तजन इन्हें विजय के देवता के रूप में पूजते हैं। सेना विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

10.6. सीमा विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छपन विनायकों में से श्री गणेश का सीमा विनायक स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है, जो वाराणसी में संकठा घाट के ऊपर मित्र विनायक के समीप स्थित है। सीमा विनायक मंदिर मणिकर्णिका घाट की उत्तरी सीमा पर स्थित होने के कारण सीमा विनायक के नाम से विख्यात है। मान्यता अनुसार सीमा विनायक इस सीमा के रक्षक हैं तथा वह अपने भक्तों के जीवन में आने वाले सभी विघ्नों से उनकी रक्षा करते हैं। सीमा विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

10.7. चिंतामणि विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छपन विनायकों में से श्री गणेश का चिंतामणि विनायक स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है, जो वाराणसी में बी—7 / 206, केदारघाट रोड पर स्थित है। मान्यता अनुसार चिंतामणि गणेश के आशीर्वाद से भक्तों को सभी प्रकार की समस्याओं का हल प्राप्त होता है तथा उनके जीवन में खुशी एवं शांति का वास होता है। गणेश चतुर्थी का पर्व यहाँ उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। गणेश चतुर्थी के पर्व के अवसर पर चिंतामणि गणेश की प्रतिमा का भव्य रूप से श्रृंगार किया जाता है। भगवान विनायक के इस दिव्य रूप के दर्शन करने हेतु भारी संख्या में श्रद्धालु यहाँ आते हैं। मंदिर प्रतिदिन श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु प्रातः 5:30 बजे से 11:00 बजे तक तथा सायं 05:00 बजे से रात्रि 9:00 बजे तक खुलता है। सायं 7:30 बजे यहाँ आरती होती है।

10.8. महाराज विनायक(बड़ा गणेश) मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छपन विनायकों में से श्री गणेश का महाराज विनायक (बड़ा गणेश) स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में के—58 / 101, लोहटिया में स्थित है। महाराज विनायक (बड़ा विनायक) मंदिर में भगवान गणेश के साथ उनकी पत्नी रिद्धि-सिद्धि तथा उनके पुत्र शुभ व लाभ की प्रतिमा भी स्थापित है। मान्यता अनुसार महाराज विनायक के दर्शन—पूजन से भक्तों के सारे रुके काम बन जाते हैं तथा उन्हें सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही महाराज विनायक श्रद्धालुओं के सभी पापों को मुक्त कर उन्हें संपूर्ण खुशी प्रदान करने के लिए विख्यात हैं। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 04.45 से रात्रि 10.30 बजे खुलता है।

10.9. मित्र विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छपन

विनायकों में से श्री गणेश का मित्र विनायक स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में आत्मा वीरेश्वर के परिसर में सीके-7 / 158, सिंधिया घाट पर स्थित है। मान्यता अनुसार मित्र विनायक के दर्शन—पूजन से भक्तों को सफलता एवं समृद्धि की प्राप्ति होती है। यहाँ स्थापित विनायक की प्रतिमा चमकदार नारंगी रंग की है तथा त्रिनेत्र है। भगवान शिव के पुत्र होने के कारण ऐसा माना जाता है कि इनकी तीसरी आँख में भक्तों के जीवन से सभी विघ्नों को नष्ट करने की क्षमता है। मित्र विनायक मानवता के शुभचिंतक माने जाते हैं तभी यह इस नाम से विख्यात है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 05:00 से 11:30 बजे तक तथा दोपहर 12:30 से रात्रि 9:30 बजे तक खुला रहता है।

10.10. कुडिताक्ष विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का कुडिताक्ष विनायक स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में लक्ष्मी कुण्ड में महालक्ष्मी गौरी मंदिर के समीप पुराने लक्ष्मी मंदिर के अंदर डी-52 / 38 पर स्थित है। मान्यता अनुसार कुडिताक्ष विनायक नकारात्मक शक्तियों से काशी की रक्षा करते हैं। कुडिताक्ष विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

10.11. भगीरथ विनायक मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार वाराणसी में स्थित छप्पन विनायकों में से श्री गणेश का भगीरथ विनायक स्वरूप एकादश विनायक यात्रा में सम्मिलित है जो वाराणसी में त्रिसन्ध्य विनायक के समीप ललिता घाट पर स्थित है। मान्यता अनुसार भगीरथ विनायक अपने भक्तों को अपनी उपेक्षाओं को पूरा करने की निष्ठा प्रदान करते हैं। भगीरथ विनायक मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

11.0. काशी में विष्णु

काशी खण्ड के अनुसार जब भगवान शिव द्वारा दिवोदास का उसके राज्य से उद्वासन कराने हेतु भेजे गए भगवान गणेश (जिसका वर्णन उक्त 8.0 में वर्णित कथा में किया गया है) भी लौटने में विलम्ब कर रहे थे तब भगवान शिव ने भगवान विष्णु से काशी में गमन कर अधूरे कार्य को पूर्ण करने का आग्रह किया। तदुपरांत वह काशी को प्रस्थान कर गए तथा उन्होंने काशी पहुँचकर गंगा—वरणा—संगम पर आदि—केशव के रूप में पादोदकतीर्थ के समीप अपनी प्रतिमा स्थापित की तथा काशी की उत्तर दिशा में धर्मक्षेत्र नामक स्थान पर माँ लक्ष्मी तथा गरुड़ साथ जा पहुँचे। तदुपरांत भगवान विष्णु ने एक अत्यंत सुंदर एवं त्रैलोक्य—मोहक बौद्धरूप धारण किया, माँ लक्ष्मी ने परिव्राजिका तथा गरुड़ ने महाविद्यान बौद्ध शिष्य का रूप धरण किया तथा वह तीनों दिवोदास के राज्य के नागरिकों की बुद्धि

में उल्टी—सीधी बातें भरने लगे। परिणामतः दिवोदास के राज्य के नागरिक आकर्षण एवं वशीकरण की विद्या सीख—सीखकर परस्त्रियों के प्रति व्यापार—रत होने लगे। परिव्राजिका ने अनेक अपसिद्धियों का जाल फैलाकर सर्वत्र नगर में कदाचार—अनाचार का जाल बिछा दिया। इस कालावधी में विश्वेश्वर दुंडिराज ने दूर बैठकर ही राजा दिवोदास को राज्य से खिन्नचित कर दिया। अपने राज्य की स्थिति से खिन्नचित होकर राजा दिवोदास को जब ज्ञात हुआ कि अठारह दिवस उपरांत उसके राज्य में औदीच्य ब्राह्मण आने वाले हैं तो राजा उनके आने का अत्यंत उत्सुक होकर प्रतीक्षा करने लगे। फिर अठारह दिन बाद दिवोदास के राज्य में उत्तम ब्राह्मण के रूप में स्वयं भगवान विष्णु पधारे। ब्राह्मण के आगमन पर राजा दिवोदास ने ब्राह्मण का अच्छी तरह अतिथि—सत्कार किया तथा अपने राज्य की स्थिति बताते हुए ब्राह्मण से ऐसे उपाय की प्रार्थना की जिससे उसे गर्भवास का दुरुख न भोगना पड़े।

उत्तर स्वरूप श्री विष्णु ने दिवोदास के गुणों, सत्कर्मों आदि की प्रशंसा करते हुए उसकी तपरूपाधाना का बखान किया। फिर श्री विष्णु ने दिवोदास को यह बताया कि भगवान विश्वेश्वर को काशी से हटाकर उसने बहुत बड़ा अपराध किया है जिसके कारणवश यह स्थिति उत्पन्न हुई है तथा उपाय स्वरूप उसे काशी में शिवलिंग स्थापित करने को कहा। साथ ही यह भी बताया कि काशी में शिवलिंग स्थापित कर लेने के सातवें दिवस भगवान शिव का विमान आकर राजा को स्वर्गलोक ले जाएगा। कथन अनुसार राजा दिवोदास ने वैसा ही किया तथा रुद्रभक्त विमान आकर दिवोदास को स्वर्गलोक ले गया। इस कालावधी में भगवान विष्णु अपने समस्त भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए काशी में पंचनद तीर्थ में स्थापित हो गए।

काशी में भगवान विष्णु अठारह स्वरूप में स्थापित हैं जो काशी में विष्णु यात्रा में समिलित किए गए हैं। श्री विष्णु के निम्न स्वरूप यात्रा में समिलित हैं—

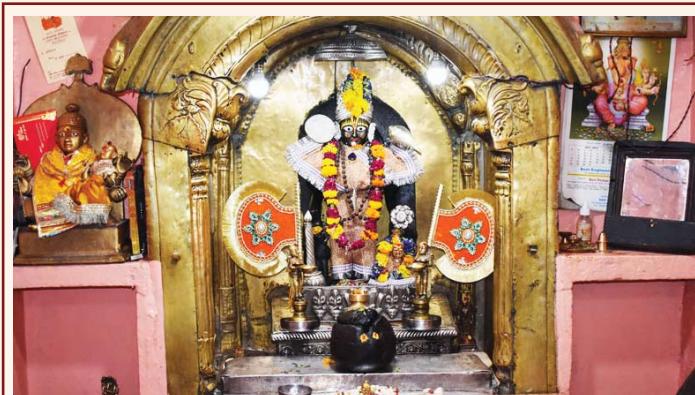
- i. श्री विन्दु माधव
- ii. श्री आदि केशव
- iii. श्री नारद केशव
- iv. श्री प्रह्लाद केशव
- v. श्री यज्ञ वाराह विष्णु
- vi. श्री विदार नरसिंह
- vii. श्री गोपी गोविंद
- viii. श्री हयग्रीव केशव
- ix. श्री श्वेत माधव

ग्रोश का पथ

- x. श्री प्रयाग माधव
- xi. श्री गंगा केशव
- xii. श्री बैकुंठ माधव
- xiii. श्री प्रचण्ड नरसिंह
- xiv. श्री अत्युग्र नरसिंह
- xv. श्री कोलाहल नरसिंह
- xvi. श्री विकटक नरसिंह
- xvii. श्री कोकावाराह
- xviii. श्री धरणिवाराह

11.1. श्री बिन्दु माधव मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार (जिसका उल्लेख 11.0 में किया गया है) भगवान विष्णु द्वारा राजा दिवोदास का उसके राज्य से उच्चाटन करने के पश्चात वह पादोदक तीर्थ पर आदिकेशव रूप में



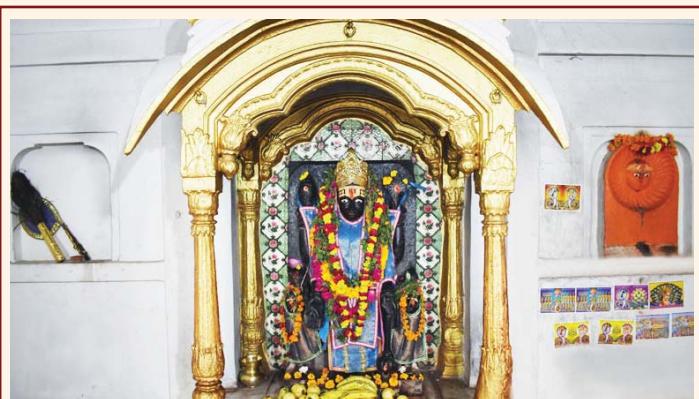
श्री बिन्दु माधव मंदिर

विराजमान हो गए। वहाँ पहुँच कर भगवान विष्णु काशी की महिमा का चिन्तन करते हुये पंचनद तीर्थ पहुँचे तथा वहाँ काशी की महिमा, विशिष्टता से मुग्ध हुए। पंचनद तीर्थ पर भगवान विष्णु ने एक ऋषि देखा एवं उसके समीप पहुँचे। भगवान विष्णु को अपने समक्ष देख वह ऋषि उनके श्लोकों की स्तुति करने लगा। श्री विष्णु जी ने ऋषि की स्तुति से प्रसन्न हो वर-याचना की बात कही। उत्तर स्वरूप ऋषि ने भगवान विष्णु से सर्वदा पंचनद तीर्थ के आस पास विराजमान रहने तथा उनके नाम से विख्यात होने का वरदान की इच्छा प्रकट की। तदनुसार भगवान विष्णु ने ऋषि को उसकी इच्छानुसार वरदान प्रदान किया तथा वह पंचनद तीर्थ पर बिन्दु माधव नाम से विख्यात हुए। उनकी उपस्थिति से तीर्थ अत्यंत पवित्र माना

जाता है तथा यह माना गया है कि इस तीर्थ में स्नान उपरांत श्रद्धालुओं को धन एवं समृद्धि कि प्राप्ति होती है। मान्यता अनुसार यह तीर्थ श्रद्धालुओं को सभी पापों से मुक्ति प्रदान करता है। बिन्दु माधव मंदिर वाराणसी में के—22 / 37, पंच गंगा घाट पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु यह मंदिर प्रातः 4:00 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक खुला रहता है।

11.2. श्री आदि केशव मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक आदि केशव स्वरूप है। आदि



श्री आदि केशव मंदिर

केशव मंदिर वाराणसी में वरुणा

नदी एवं गंगा नदी के संगम पर

ए—37 / 51, आदि केशव घाट पर स्थित है। मान्यता अनुसार जब भी भगवान विष्णु को पृथ्वी पर पधारना होता है वह अपना पहला कदम इसी स्थान पर रखते हैं जहाँ आदि केशव मंदिर स्थित है। यह वाराणसी में स्थित मंदिरों में सबसे पुराने मंदिर में से एक माना जाता है। इस मंदिर की वास्तुकला अत्यंत सुंदर है तथा यह भारतीय शैली में बने मंदिरों से अलग है। इस मंदिर में आदि केशव—संगमेश्वर लिंग है जो अपने तरह का पहला चार मुखी लिंग है। मान्यता अनुसार जो भी भक्त भगवान विष्णु के आदि केशव स्वरूप की आराधना करता है उसे अपने जीवन में सभी दुखों से छुटकारा मिलता तथा उसके जीवन में सिर्फ खुशहाली का वास होता है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु यह मंदिर प्रातः 6:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक तथा सायं 4:00 बजे से रात्रि 10:00 बजे तक खुला रहता है।

11.3. श्री नारद केशव मंदिर

हिंदु शास्त्रों के अनुसार नारद मुनि को ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक माना गया है। वह भगवान विष्णु के अनन्य भक्तों में से एक माने जाते हैं जो न सिर्फ निरंतर भगवान विष्णु का जप करते रहते हैं बल्कि उन्हें



श्री नारद केशव मंदिर

समय—समय पर विभिन्न परिस्थितियों से एक सच्चे दूत के रूप में अवगत भी कराते हैं। नारद मुनि सच्चे भक्तों की गुहार भगवान विष्णु तक पहुँचाने के लिए अच्छे स्रोत माने गए हैं तथा वह भगवान से उनके सच्चे भक्तों के न्याय हेतु अनुरोध के लिए भी जाने जाते हैं। मान्यता अनुसार नारद मुनि को यह वरदान प्राप्त है कि वह ब्रह्माण्ड में कहीं भी जा सकते हैं जिसका पूर्ण उपयोग कर वह देवलोक, पृथ्वीलोक तथा पाताललोक में अक्सर आवागमन कर सभी स्थानों पर स्थिति का निरीक्षण करके भगवान विष्णु को उसकी सूचना देने हेतु जाने जाते हैं। इसलिये ऐसा माना जाता है कि जो भी भक्त वाराणसी में स्थित नारद घाट में स्नान के उपरांत नारद केशव की आराधना करता है उन्हे भगवान विष्णु के आशीर्वाद एवं अपार ज्ञान की प्राप्ति होती है। मान्यता अनुसार नारद केशव की स्थापना स्वयं देवर्षि नारद ने की थी। नारद केशव वाराणसी में ए-10/80, प्रह्लाद घाट पर स्थित शीतला मंदिर के अंदर प्रह्लादेश्वर के सामने स्थित है। यह मंदिर श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु दिन भर खुला रहता है।

11.4. श्री प्रह्लाद केशव मंदिर

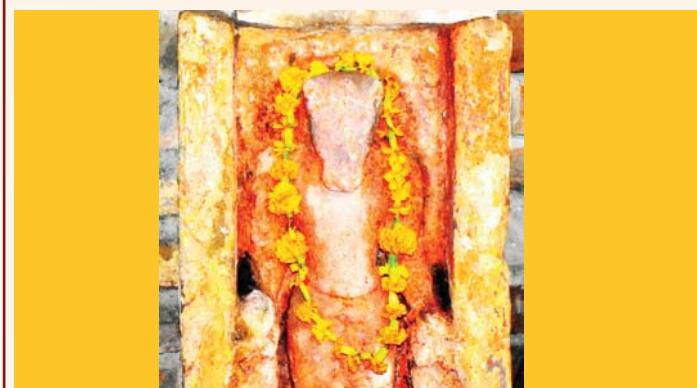
वाराणसी में स्थित प्रह्लाद घाट एक विस्तृत क्षेत्र में फैला घाट है जिसका नाम भगवान विष्णु के एक निष्ठावान भक्त प्रह्लाद के नाम पर रखा गया है। प्रह्लाद केशव मंदिर ए-10/80, प्रह्लाद घाट में प्रह्लादेश्वर मंदिर में स्थित है। मान्यता अनुसार भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार में अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा उसके क्रूर पिता हिरण्यकश्यप से की थी। पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु प्रह्लाद घाट पर प्रह्लाद केशव के रूप में विराजमान हो अपने भक्तों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं। ऐसा माना जाता है कि प्रह्लाद घाट पर स्नान के उपरांत प्रह्लाद केशव की आराधना करने से श्रद्धालुओं की सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 6:00 बजे से 11:00 बजे तक



तथा सायं 6:00 बजे से 7:00 बजे तक खुला रहता है।
श्री प्रह्लाद केशव मंदिर

11.5. श्री यज्ञ वाराह विष्णु मंदिर

पौराणिक कथाओं के अनुसार पद्मकल्प समाप्त होने के उपरांत पृथ्वी पर महा प्रलय आई जिसके कारणवश सूर्य की अत्यधिक ऊष्मा के कारण पृथ्वी पर सभी वन सूख गए तथा समुद्रों का जल उबलने लगा एवं



कई ज्वालामुखियों का विस्फोट भी हुआ। अत्यधिक ऊष्मा के कारण पृथ्वी का सारा जल भाप में परिवर्तित हो गया तथा बादल के रूप में आकाश में जमा होने लगा तथा पृथ्वी पर निरंतर बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गई। चक्रवात बढ़ने लगे तथा जल प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो गई जिसमें पूरी पृथ्वी ढूब गई। पृथ्वी की यह स्थिति देख भगवान ब्रह्मा बेहद चिंतित हो उठे तथा उन्होंने जल में वास करने वाले भगवान विष्णु से सहायता का अनुरोध किया। भगवान ब्रह्मा के अनुरोध पर भगवान विष्णु नील वाराह के रूप में प्रकट हुए तथा उन्होंने पृथ्वी को जल प्रलय से बचाया तथा अपनी

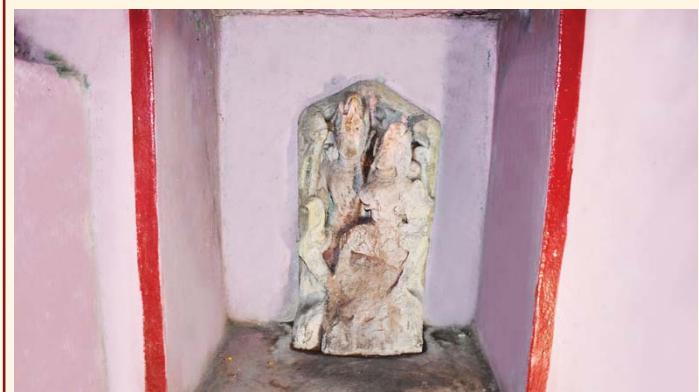
श्री यज्ञ वाराह विष्णु मंदिर

ग्रोश का पथ

समस्त सेना के साथ पृथ्वी को रहने योग्य बनाया। क्योंकि पृथ्वी को निष्ठापूर्वक बचाना तथा मानव जाति के लिए पूरी प्रतिबद्धता से योगदान देना भी एक प्रकार का यज्ञ है इसलिये नील वाराह को यज्ञ वाराह के नाम से भी जाना जाता है। पुराणों के अनुसार काशी में भगवान विष्णु यज्ञ वाराह तीर्थ पर यज्ञ वाराह के रूप में विराजमान हैं। मान्यता अनुसार यज्ञ वाराह की आराधना करने से श्रद्धालुओं को यज्ञ के समान लाभ प्राप्त होता है। यज्ञ वाराह मंदिर ऐ-11/30, स्वर्लीनेश्वर पर पंच अग्नि अखाड़ा घाट पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 06:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक तथा सायं 4:00 बजे से रात्रि 9:00 बजे तक खुला रहता है।

11.6. श्री विदार नरसिंह मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक विदार नरसिंह स्वरूप है। विदार नरसिंह के रूप में भगवान विष्णु काशी के विघ्नों के विदारक माने



के-4/24, बिरला संस्कृत

श्री गोपी गोविंद मंदिर

विद्यालय के समीप लाल घाट, बिरला हाउस पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 07:00 से रात्रि 10:00 बजे तक खुला रहता है। यहाँ प्रातः काल में आरती होती है।

11.8. श्री हयग्रीव केशव मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक हयग्रीव केशव स्वरूप है। विष्णु के इस स्वरूप का परिचय हमें नाम से ही हो जाता है। हय का अर्थ है



श्री विदार नरसिंह मंदिर

जाते हैं। मान्यता अनुसार इसी नाम के तीर्थ के दर्शन मात्र से श्रद्धालु उपद्रवों को शान्त कर सकते हैं। विदार नरसिंह ऐ-10/82, प्रह्लाद घाट पर स्थित है। वैकल्पिक रूप से मंदिर तक नौका यात्रा करके भी पहुँचा जा सकता है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 4:30 से दोपहर 12:00 बजे तथा सायं 4:00 से रात्रि 9:00 बजे तक खुला रहता है। मंदिर में वैशाख शुक्ल त्रयोदशी पर नरसिंह जयंती अत्यंत उत्साहपूर्वक मनाई जाती है।

11.7. श्री गोपी गोविंद मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक गोपी गोविंद स्वरूप है। मान्यता अनुसार श्री गोपी गोविंद की आराधना करने वाले सभी भक्तों को भगवान विष्णु का आशीर्वाद प्राप्त होता है। वाराणसी में गोपी गोविंद मंदिर



अश्व तथा ग्रीव का तात्पर्य ग्रीवा से

है। अर्थात् अश्व के समान गर्दन वाले

भगवान विष्णु के इस स्वरूप में उनके ग्रीवा तक का भाग अश्व के समान है। हयग्रीव केशव बुद्धि के देवता माने जाते हैं तथा वे श्रद्धालुओं को बुद्धि प्रदान करते हैं। वाराणसी में हयग्रीव केशव बी-3/25, अनदमयी अस्पताल के समीप भद्रेनी पर स्थित हैं। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर दिन भर खुला रहता है।

11.9. श्री श्वेत माधव मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक श्वेत माधव स्वरूप है। प्राचीन काल में श्वेत नामक एक शक्तिशाली राजा था जो अत्यंत बुद्धिमान,



श्री श्वेत माधव मंदिर

साहसी, सत्यवादी एवं दयालु स्वभाव का था। इसके शासनकाल में, इसके वंशज दस हजार साल राज्य करे थे। इसके शासन की कालावधि में बाल अवस्था में किसी की भी मृत्यु नहीं हुई थी। परंतु राजा के साम्राज्य के धर्माध्युरार धर्मात्मा ऋषि कपाल गौतम के बालक की शिशु अवस्था में ही मृत्यु हो गई। यह एक चकित करने वाली घटना थी इसलिये ऋषि कपाल गौतम ने अपने पुत्र को अपनी गोद में उठाया तथा राजा के दरबार पहुँच गए। इस घटना का ज्ञात होकर राजा व्याकुल हो गए तथा शिशु को पुनर्जीवित करने के लिए प्रार्थना करने लगे। जब उनकी प्रार्थना का कोई असर न हुआ तब राजा ने कहा “अगर मैं सात दिनों के भीतर ऋषि कुमार की जान यमलोक से पृथ्वी पर वापस लाने में असफल रहूंगा तो मैं जलती चिता में चला जाऊँगा”। ऐसा कहने के उपरांत राजा एक लाख नीलकमल से महादेव की आराधना में लीन हो गया। आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शिव माता पार्वती के साथ प्रकट हुए तथा उन्होंने राजा से वर माँगने को कहा। उत्तरस्वरूप राजा ने भगवान शिव से शिशु को पुनर्जीवित करने का वर माँगा। महादेव जी ने उसका वर स्वीकार कर बालक को पुनर्जीवित कर दिया।

तदुपरांत सांसारिक धर्म और अन्य वैदिक नियमों को ध्यान में रखते हुए राजा ने सब त्याग दिया और वह भगवान केशव की आराधना में समर्पित हो गए। राजा श्वेत दक्षिण समुद्र के पुरुषोत्तम क्षेत्र गए तथा वहाँ उन्होंने जगन्नाथ मंदिर के पास एक अत्यंत सुंदर मंदिर बनवाया जिसमें भगवान श्वेत माधव की सफेद संगमरमर की प्रतिमा स्थापित की। इस

मंदिर की स्थापना के उपरांत राजा ने लोगों को, ब्राह्मणों को, अनाथों को दान—दक्षिणा प्रदान की तथा भगवान माधव की तपस्या की व दशाक्षर मंत्र का मौन एवं व्रत रखकर धर्मनिष्ठ होकर एक माह तक जप किया। उसकी प्रार्थना से प्रसन्न हो स्वयं जगद्गुरु श्री हरी समस्त भगवानों के साथ उनके समक्ष आए जिनसे राजा ने वरदान स्वरूप वैकुण्ठ धाम में स्थान प्राप्त करने का अनुग्रह किया। भगवान विष्णु ने राजा का वर स्वीकार किया तथा स्वयं वहाँ श्वेत माधव की प्रतिमा के रूप में स्थित हो गए। मान्यता अनुसार जो भी मनुष्य ‘श्वेतमाधव’ की प्रतिमा का नमन करता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है तथा श्वेत माधव की आराधना करने वाले भक्तों को भगवान के बराबर का दर्जा प्राप्त होता है। वाराणसी में श्वेत माधव मीर घाट पर डी-3/71, बड़ा हनुमान मंदिर पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 07:00 से दोपहर 01:00 बजे तथा सायं 04:00 से 09:00 बजे तक खुला रहता है। यहाँ प्रातः काल एवं सायंकाल में आरती होती हैं।

11.10. श्री प्रयाग माधव मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक प्रयाग माधव स्वरूप है। मान्यता अनुसार प्रयाग तीर्थ में स्नान के उपरांत प्रयाग माधव की आराधना करने से श्रद्धालुओं को पर्याप्त धन, अनाज, परिवार की खुशहाली के साथ—साथ मोक्ष का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। हालांकि वर्तमान काल में प्रयाग तीर्थ मौजूद नहीं है तथा उसका ज्यादातर हिस्सा दशाश्वमेध में आता

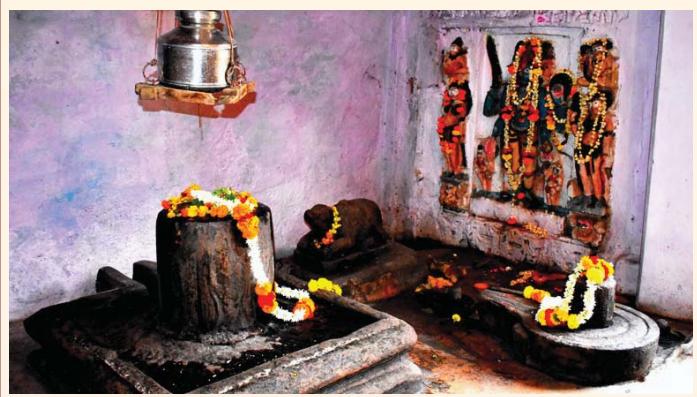


श्री प्रयाग माधव मंदिर

है। प्रयाग माधव दशाश्वमेध घाट में राम मंदिर के परिसर में डी-17/111 पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 05:00 से दोपहर 12:00 बजे तक तथा सायं 04:00 से रात्रि 09:30 बजे तक खुला रहता है। यहाँ पर प्रातः एवं सायंकाल में आरती होती है।

11.11. श्री गंगा केशव मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक गंगा केशव स्वरूप है। ललिता घाट पर भगवान विष्णु शिवलिंग के रूप में गंगा केशव के नाम से

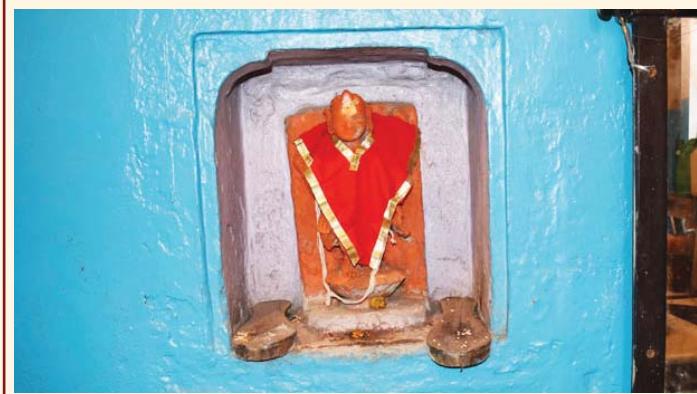


श्री गंगा केशव मंदिर

स्थापित हैं। मान्यता अनुसार भगवान विष्णु द्वारा शिवलिंग की आराधना से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें यह आशीर्वाद दिया कि वह काशी में शिवलिंग के रूप में वास कर सकते हैं। गंगा नदी के तट में स्थित होने के कारण भगवान विष्णु यहाँ गंगा केशव के नाम से विख्यात हुए। मान्यता अनुसार गंगा केशव के दर्शन—पूजन से श्रद्धालुओं को विष्णु लोक (वैकुंठ) में सम्मानित एवं गौरवान्वि स्थान प्राप्त होता है तथा अपने पूर्वजों का स्नान उपरांत श्राद्ध करने से पितरों को शांति मिलती है। गंगा केशव मंदिर ललिता घाट पर सीढ़ियाँ चढ़कर डी-1 / 67 पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर हर समय खुला रहता है तथा यहाँ भक्तजन कभी भी पूजा कर सकते हैं।

11.12. श्री बैकुंठ माधव मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक बैकुंठ माधव स्वरूप है। भगवान विष्णु सर्वत्र हैं। तभी वह विष्णु कहलाते हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ असीम होता है। वैरोचनेश्वर की पूर्वी ओर भगवान विष्णु बैकुंठ माधव के रूप में मौजूद हैं। बैकुंठ, बैकुंठलोका, विष्णुलोका, परमम पदम् या नित्या विभूति भगवान विष्णु के दिव्य स्थान माने जाते हैं जो भौतिक ब्रह्मांड के परे है। बैकुंठ में भगवान विष्णु उनकी अधाँगिनी माता लक्ष्मी तथा उन सब आत्माओं का निवास है जिन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई है। मान्यता अनुसार जो भी भक्त पूरी श्रद्धा से भगवान विष्णु की बैकुंठ रूप में आराधना करता है उसे भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इसका निहित अर्थ यह है कि मृत्यु के



बाद, भक्त को वैकुंठ (भगवान विष्णु का निवास) में स्थान प्राप्त होता है।

वाराणसी में बैकुंठ माधव मंदिर हरिश्चंद्रेश्वर, सिंधिया घाट के पास सीके-7 / 165 पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर हर समय खुला रहता है।

11.13. श्री प्रचण्ड नरसिंह मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक प्रचण्ड नरसिंह स्वरूप है। वाराणसी में प्रचण्ड नरसिंह जगन्नाथ मंदिर में स्थित है। प्रचण्ड नरसिंह



श्री प्रचण्ड नरसिंह मंदिर

भगवान विष्णु का एक अवतार है जिसमें भगवान विष्णु ने अर्द्ध शेर व अर्द्ध मनुष्य के रूप में बुराई का नाश कर धरती पर धार्मिक उत्पीड़न और आपदा को खत्म किया तथा धर्म को पुनः स्थापित किया। नरसिंह को 'महान संरक्षक' के रूप में जाना जाता है जो अपने भक्तों की बुराइयों से रक्षा करते हैं। सबसे लोकप्रिय नरसिंह से सम्बंधित पौराणिक कथा के अनुसार

ग्रोश का पथ

भगवान नरसिंह ने अपने भक्त प्रह्लाद को अपने राक्षस पिता हिरण्यकशिपु की उत्पीड़न से बचाया था तथा हिरण्यकशिपु का वध किया था। ऐसा माना जाता है कि प्रचण्ड नरसिंह की आराधना करने से भक्तों को अपने सभी पापों से मुक्ति प्राप्त होती है। प्रचण्ड नरसिंह बी-1/151, जगन्नाथ मंदिर, अस्सी घाट पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 06:00 से दोपहर 12:00 बजे तक तथा सायं 03:00 से रात्रि 09:00 बजे तक खुला रहता है।

11.14. श्री अत्युग्र नरसिंह मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक अत्युग्र नरसिंह स्वरूप है। अत्युग्र दो शब्द अति एवं उग्र को मिलाकर बना है जो भगवान विष्णु के इस



श्री अत्युग्र नरसिंह मंदिर

रूप की अपार शक्ति को परिभाषित करता है। भगवान विष्णु के इस स्वरूप के सम्बन्ध में एक कथा अत्यंत प्रचलित है जिसके अनुसार मुगाल शासक औरंगजेब के शासनकाल में औरंगजेब द्वारा वाराणसी के आसपास के सभी मंदिरों को नष्ट किया जा रहा था। इसी क्रम में जब औरंगजेब की सेना अत्युग्र नरसिंह मंदिर को भी नष्ट करने चली तब अचानक अत्युग्र नरसिंह की प्रतिमा के पीछे से मधुमक्खियों का झुंड निकला तथा उसने सेना पर आक्रमण किया। सेना इसे सहन न कर पाए तथा वह मंदिर को नष्ट किए बिना ही वहाँ से चले गए। कोई यह पता नहीं लगा सका कि यह मधुमक्खियों का झुंड कहाँ से मंदिर परिसर में आया। मान्यता अनुसार जो भी भक्त अत्युग्र नरसिंह की आराधना करते हैं उन्हें अपने सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है। वाराणसी में अत्युग्र नरसिंह सीके-8/21, गोमठ पर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 06:00 से 10:00 बजे तक तथा सायं 10:00 से 04:00 बजे तक खुलता है।

11.15. श्री कोलाहल नरसिंह मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक कोलाहल नरसिंह स्वरूप है। मान्यता अनुसार भगवान कोलाहल नरसिंह की आराधना करने से भक्तों को अपने सभी पापों से मुक्ति मिलती है तथा उन्हें विकृत अवस्था से भी छुटकारा मिलता है। मंदिर के परिसर में ही वेद विद्यालय भी स्थित है। इस विद्यालय में बच्चों को वेद विद्या प्रदान की जाती है। वाराणसी में कोलाहल



श्री कोलाहल नरसिंह मंदिर

नरसिंह सिद्धि विनायक के ऊपर सीके 08/1 में नरसिंह मठ में स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर प्रातः 04:00 से 11:00 बजे तथा सायं 05:00 से 09:30 बजे तक खुला रहता है।

11.16. श्री विकटंक नरसिंह मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक विकटंक नरसिंह स्वरूप है।



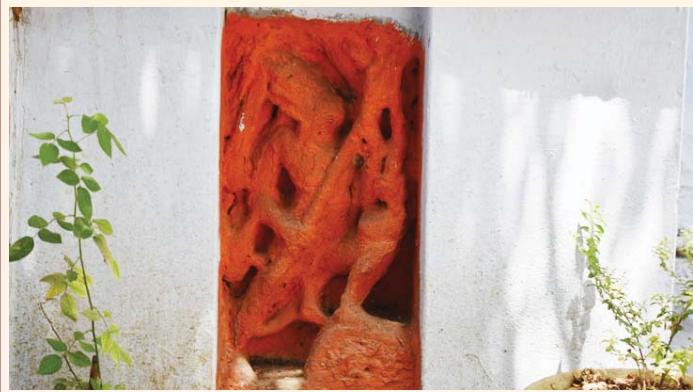
श्री विकटंक नरसिंह मंदिर

ग्रोश का पथ

मान्यता अनुसार जो भी भक्त भगवान विकटंक नरसिंह की आराधना करते हैं वह साहसी हो जाते हैं तथा उन्हें मानसिक शक्ति प्राप्त होती है जो उन्हें महत्वपूर्ण निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करती है। वाराणसी में विकटंक नरसिंह मंदिर बी-6 / 102 पर केदारेश्वर मंदिर के पूर्वी द्वार के ठीक बाहर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन—पूजन हेतु मंदिर पूरे दिन खुला रहता है।

11.17. श्री कोकावाराह मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक कोकावाराह स्वरूप है। वाराह अवतार के अंतर्गत कोकावाराह स्वरूप भगवान विष्णु के तेज का प्रतीक है।



श्री कोकावाराह मंदिर

वाराणसी में कोकवाराह सिद्धेश्वरी मंदिर (सी0 के0 7 / 124) में स्थित है। एकादशी तिथि को यहाँ दर्शन—पूजन करने का विशेष महात्म्य माना गया है।

11.18. श्री धरणिवाराह मंदिर

काशी खण्ड में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु काशी में अठारह स्वरूप में विराजमान हैं जिनमें से एक धरणिवाराह स्वरूप है। धरणिवाराह अवतार भगवान विष्णु के वाराह स्वरूपों में से एक है। यह वाराणसी में दशाश्वमेध घाट पर प्रयाग माधव के समीप—डी0 17 / 111 पर स्थित है।



श्री धरणिवाराह मंदिर





उत्तर प्रदेश पर्यटन

यू.पी. नहीं देखा, तो इंडिया नहीं देखा.

पर्यटन निदेशालय, उत्तर प्रदेश

पर्यटन भवन, सी-13, विपिन, खण्ड, गोमती नगर,
लखनऊ - 226 010

दूरभाष : 0522 - 2308993

ई-मेल : dg.upt1@gmail.com

वेबसाइट : www.uptourism.gov.in

Online Booking Portal www.uttarpradesh.gov.in



ONE STOP
TRAVEL SOLUTION



UttarPradeshTourism



uptourismgov

